# ओ३म्

## आर्यसमाज, सैक्टर 7, चण्डीगढ़

के

वर्तमान पदाधिकारी एवं अंतरंग सभा-सदस्य व संरक्षक

संरक्षक

1. श्री जस्टिस टेक चंद
2. श्री जस्टिस पी. सी. पण्डित

पदाधिकारी

3. प्रधान—चौ० रिसाल सिंह
2. वरिष्ठ उप प्रधान—श्री ओम् प्रकाश घई
3. उप प्रधान—श्री रवीन्द्र तलवाड़
4. मंत्री– श्री अविनाश चन्द्र
5. कोषाध्यक्ष—देसराज सेठी
6. उप मंत्री—श्री प्रेम पाल चड्ढा
7. हिसाब परीक्षक—श्री यशपाल कौड़ा
8. पुस्तकालयाध्यक्ष—कुमारी अनीता नन्दा
9. औषधालय—श्री राम जी दास शर्मा, वैद्य शास्त्री

अंतरंग सभा-सदस्य

1. श्री हरिवंश लाल खन्ना
2. श्री हंस स्वरूप
3. श्री तुलसी राम कपूर
4. श्री डा. एस. पाल
5. श्री पी. सी. महाजन
6. श्री शान्ति स्वरूप आनन्द
7. श्री महेंद्र सूद
8 श्री राज पाल कोहली
9, श्री दुर्गादास सूद
10. श्री वी. एन. डुडेजा
11. श्री सत्य प्रकाश आर्य
12. श्री राम नाथ कपूर
13. श्री यशपाल घई
14. श्री बाल कृष्ण आर्य
15. डा० देशराज बौरी
16. श्री धर्मेन्द्र सूद
17. श्री प्रेम कुमार आनन्द
18. डा० के. के. धवन
19. श्री के. के. अग्रवाल
20. श्री सन्तराम गांधी
21. श्री आर. पी. विग
22. श्री सोमनाथ शर्मा, प्राध्यापक, डी. ए. वी. सीनियर सैकण्ड्री स्कूल
23. श्री के. के. मेहता, डी.ए.वी. सी. सै. स्कूल
24. आर. एल कक्कड़
25. श्रीमती ईश्वरी देवी
26. श्रीमती सत्या सचदेवा
27. श्रीमती इन्द्रा वधवा
28. श्रीमती प्रकाशवती आनन्द
29. श्रीमती वेद महाजन
30. श्रीमती शीतल शर्मा

# विषय-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1- | वैदिक प्रार्थना | | 1 |
| 2- | नारी-उत्थान और आर्य समाज | डा. भवानी लाल भारतीय | 3 |
| 3- | आर्य समाज के दस नियम | | 6 |
| 4- | जीवन की सार्थकता | श्री ज्ञानचन्द्र शास्त्री | 8 |
| 5- | स्तुति | „ सत्यव्रत शास्त्री | 10 |
| 6- | प्रारम्भिक संस्कारत्रय का सर्वेक्षण | पं. उमेश कुमार शास्त्री | 11 |
| 7- | महर्षि दयानन्द — जीवन परिचय | श्री दिनेश्वर आर्य शास्त्री | 16 |
| 8 | शोक-प्रस्ताव | | 19 |
| 9- | आर्य समाज सैक्टर 7 में उपलब्ध सुविधाएं | | 20 |
| 10- | सामान्य आयुर्वेदिक चर्चा (1) मरूआ (2) राई या राजिका | | 21—22 |
| 11- | महर्षि दयानन्द बख्शी टेकचन्द धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय | | 23 |
| 12- | आभार प्रदर्शन | (1) श्री लाला कुन्दन लाल कपूर | 24-A |
| | | (2) श्रीमती प्रसन्नी देवी | 24-B |
| | | (3) श्री राम प्रताप | 24-C-D |
| | | (4) श्रीमती सुमित्रा गण्डोक | 24-E |
| | | (5) श्री सन्तराम ऐरी व श्रीमती विद्यावती ऐरी | 24-F |
| 13- | आर्यसमाज सैक्टर 7 का वार्षिक विवरण | | 25 |
| 14- | श्रीमती कमला घई पुस्तकालय व वाचनालय का विस्तृत विवरण 1986-87 | | 30 |
| 15- | श्रीमती कमला घई स्मृति पुस्तकालय एवं वाचनालय द्वारा आयोजित निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत रचनाएं | (क) प्रेरणा के स्त्रोत महात्मा हंसराज | 33 |
| | | (ख) महर्षि दयानन्द के जीवन की घटनाएं | 35 |
| 16- | महत्व पूर्ण प्राप्तियां | (1) दान सूची उत्सव 1986-87 | 37 |
| | | (2) भवन निर्माण के लिए प्राप्त दान | 41 |
| | | (3) संस्कारों से प्राप्त दान | 42 |
| | | (4) अन्य प्राप्तियां | 45 |
| | | (5) स्त्री समाज को प्राप्त दान | 47 |
| | | (6) आर्यसमाज के सदस्यों की सूची | 52 |
| | | (7) डी.ए.वी. सिनी० सैके० स्कूल, चण्डीगढ़ 8-C | 55 |

ओ३म्

# वैदिक प्रार्थनाएँ

पं. उमेश कुमार शास्त्री, एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत)
पुरोहित व वेद-प्रचार-अधिष्ठाता
आर्यसमाज सैक्टर-7 बी, चण्डीगढ़

1. **ओम् पुनान इन्दवा भरसोम द्विबर्हसं रयिम् । त्वं वसूनि पुष्यसि विश्वानि दाशुषो गृहे ।। ऋग्वेद 6/100/2**

दयालु हैं हम पर भगवन् तो, दया-पात्र बना देवें,
सौंपा सब कुछ मुक्तिदाता, मुक्त करें बहला देवें ।
कृपासिन्धो, दोनों लोकों में, समृद्ध हमें बना देवें,
ऐश्वर्य का वर्द्धन करें, पर त्याग पाठ पढ़ा देवें ।।

2. **ओम् पवस्व वाजसातमः पवित्रे धारया सुतः । इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः ।। ऋग्वेद-6/100/6**

बलशाली प्रेरक प्रभो, ज्ञानी दानी है सर्वोत्तम,
तेरी उपासना हम करें, तू कर हमारा मन सुमन ।
विद्वान् पुरुषों को बढ़ा, धरा-धाम-विष्णु देव सोम,
व्यापक पिता मधुमान् तू, हरदम बोलें हम मधु-मधु ।।

3. **ओम् शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै । ऋग्वेद-7/109/5**

देदीप्यमान् हो सूर्यवत्, शीतल प्रभो तू जलभाँति,
आशुकर्मकारी वायु तू, गतिमान् प्रेरक सोम हो ।
सर्वशक्तिमान् भगवन्, सुख-शांति के तू धाम हो,
पृथिवी, द्यौ आकाशादि, सर्वलोक के हितकाम हो ।।

**4. ओम्-पवस्व सोम क्रत्वे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय। ऋ. 7/109/10**

कर अनुग्रह हम सबों पर, तू सदा परमात्मा,
सर्वदा गतिशील बनकर, हो सफल हर आत्मा।
धन भी होवे जन भी होवे, बल अरु सब मान हो,
सब दिशाओं में सदा, प्रभो तेरी ही जयगान हो॥

**5. ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव। यजु० 30/3**

हे सकल जगत्कर्त्ता, ऐश्वर्य के भण्डार तू,
शुद्ध स्वरुप सुखों के दाता, कृपा के करतार तू।
दुर्व्यसन दुर्गुण हमारे दुःख दूर सब कर दीजिए,
भद्र हमें स्वभाव दे, गुण-कर्म-धन दे दीजिए॥

**6. ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिस्ठां ते नम उक्ति विधेम। यजु०-40/16**

अग्नि देव ! तेरी प्रशंसा, हम सदा करते रहें,
सन्मार्ग पर चलकर पिता, हम पाप से हटते रहें।
राज्य पा सब भोग्य पावें, धर्म पर डटते रहें,
नम्रतापूर्वक प्रभो हम, विनय सब करते रहें॥

---

# तप क्या है ?

हे शिष्य-ऋतं तपः सत्यं तपः श्रुतं तपः शान्तं तपं दमस्तपश्शमस्तपो दानं तपो यज्ञस्तपो ब्रह्मा भूर्भुवः स्वःब्रह्मैतदुपास्य स्वैतत्तपः।

अर्थ— हे शिष्य ! यथार्थ का ग्रहण, सत्य मानना, सत्य बोलना, वेदादि सत्य शास्त्रों का सुनना, अपने मन को अधर्म आचरण में न जाने देना, श्रोत्रादि इन्द्रियों को दुष्टाचार से रोक श्रेष्ठाचार में लगाना क्रोधादि को त्याग शान्त रहना, विद्यादि शुभ गुणों का दान करना. अग्नि होत्रादि और विद्वानों का संग करना, जितने भूमि, अन्तरिक्ष और सूर्यादि लोकों में पदार्थ हैं उनका यथाशक्ति ज्ञान करना, और योगाभ्यास, प्राणायाम, एक ब्रह्म परमात्मा की उपासना करना; यह सब कर्म करना ही तप कहलाता है।

# "नारी–उत्थान और आर्यसमाज"

—ले. डा. भवानी लाल भारतीय
अध्यक्ष-दयानन्द चेयर,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

## आर्य संस्कृति में नारी का महत्त्व :-

यद्यपि संसार में समय-समय पर विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों का उदय हुआ है, किन्तु वेदों पर आश्रित आर्य धर्म और आर्य संस्कृति सर्वाधिक प्राचीन तथा श्रेष्ठ है। यजुर्वेद में इसे ही विश्ववारा तथा प्रथम संस्कृति कहा गया है :—

सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा। यजुर्वेद

आर्य संस्कृति में नारी को जैसा महत्त्व प्रदान किया गया है, वैसा अन्य किसी संस्कृति में दिखाई नहीं देता। विशेषत: सैमेटिक मतों को मानने वाले ईसाई तथा मुसलमान समाज में नारी को पुरुष की अपेक्षा सर्वथा हीन तथा गर्हित स्थान दिया गया है। बाईबिल में तो यहां तक लिखा है कि नारी में आत्मा ही नहीं होती और इस्लाम के मान्य ग्रन्थों में नारी को पुरुष की भोग्या ही माना गया है। जिस समय इतिहास के मध्ययुग में भारत इस्लामी सम्पर्क में आया तथा मुसलमान शासकों के धार्मिक एवं सामाजिक अत्याचार इस देश के निवासी हिन्दुओं पर होने लगे तो नारी की रक्षा के लिये यहां भी उसकी स्वतन्त्रता को अनेक प्रकार से सीमित कर दिया गया। बाल-विवाह का प्रचलन हुआ, स्त्री, शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाया गया तथा विवाहिता स्त्रियों को पर्दे में रखा जाने लगा। बाल-विवाहों के प्रचलन से देश में विधवाओं की संख्या बढ़ी। फलत: स्त्रियों को मूल पति के साथ अनिवार्यत: सती होने के लिये बाध्य किया जाने लगा। नारियों पर किये जाने वाले अमानुषिक, बर्बर तथा क्रूरता पूर्ण अत्याचारों से मध्यकाल का इतिहास भरा पड़ा है।

समाज की ही भांति धर्म के क्षेत्र में भी नारियों के अधिकारों का अपहरण हुआ। उनमें वेद तथा अन्य शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने के अधिकार से वंचित किया गया, यहां तक की नारी द्वारा परमात्मा के मुख्य नाम ओम् को भी उच्चारण करने तथा वैदिक धर्म के मान्य महामन्त्र गायत्री का जप करने को भी शास्त्राज्ञा के प्रतिकूल कहा जाने लगा। मध्यकाल के धर्माचार्यों, सन्तों, महात्माओं तथा विचारकों ने नारी की निंदा करने में कोई और कसर नहीं उठा रखी। आदि शंकराचार्य के नाम से प्रचलित प्रश्नोत्तरी नामक एक लघु ग्रन्थ में नारी को नरक का द्वार तथा विश्वास के अयोग्य कहा तो कबीर जैसे निर्गुणवादी सन्त ने नारी को भुजंगिनी से उपमित किया। गोस्वामी तुलसीदास ने तो स्वरचित रामचरितमानस में स्त्री की निन्दा में अनेक उक्तियां लिखी। कहीं उन्हें ढोल, गंवार और शुद्रों के समान ताड़ना का पात्र बताया तो अन्यत्र उन्हें नाना प्रकार के अवगुणों की खान ही बनाया।

वस्तुतः नारी के प्रति यह असम्मान जनक दृष्टिकोण न तो भारत के पुराकालीन ऋषियों द्वारा ही मान्यता प्राप्त था और न उसे वेदों अथवा अन्य प्राचीन आर्ष शास्त्रों में ही, अपितु वेदों व आर्ष ग्रन्थों में नारी के गौरव और सम्मान को सदा प्रशंसा पूर्ण शब्दावली में वर्णित किया जाता रहा। वेदों में स्त्री-जाति को जो गरिमा तथा महत्त्व प्रदान किया गया है, वह अनेक सूक्तों में स्पष्ट व्यञ्जित हुआ है। ऊषा-देवता के सूक्तों में नारी के सौन्दर्य, शालीनता तथा उसके मोहक व्यक्तितत्व को अत्यन्त काव्यात्मक एवं प्रतीकात्मक शैली में वर्णित किया गया है।

वेदों की ही भांति स्मृति-साहित्य में भी नारी को आदर एवं पूजा की पात्री कहा गया है। आद्य स्मृतिकार मनु के शब्दों में—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूजयन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।।

जिस घर में स्त्रियों का सम्मान होता है वहां मानो देवता ही रमण करते हैं और जहां उनका आदर नहीं होता, वहां के निवासियों के सभी पुण्य कृत्य भी निष्फल ही रहते हैं। भारतीय नारी के गौरव पूर्ण इतिहास का सिंहावलोकन करने के लिये हमें महर्षि बाल्मीकि तथा महर्षि कृष्ण द्वैपायन रचित रामायण तथा महाभारत जैसे आर्ष काव्यों को देखना होगा। रामायण में कौसल्या, सुमित्रा, सीता, मन्दोदरी आदि मनस्विनी, तेजस्विनी तथा उदात्तचरिता नारियों का चित्रण किया गया है। इसी प्रकार महाभारत में कुन्ती, द्रौपदी, गांधारि, सुभद्रा जैसी आर्य शील, चरित्र तथा सदाचार से सम्पन्न सन्नारियों का चित्रण कर कवि ने अपनी लेखनी को धन्य किया है।

नारी-जाति को उसके गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित करने तथा उसके लुप्त एवं अपहृत अधिकार उसे पुनः दिलाने में आर्यसमाज तथा उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वामी दयानन्द ने नारी को न केवल धार्मिक अधिकार दिलाने के लिये ही पौराणिक पुरोहित-समुदाय से घोर संघर्ष किया, अपितु समाज में उसकी स्थिति एवं सम्मान को सुदृढ़ करने के लिये भी अथक प्रयत्न किया। उन्होंने अपने ग्रन्थों में नारी की शिक्षा, गृह एवं परिवार में उसकी सम्मानजनक स्थिति, विवाह एवं गृहस्थ संचालन में उसके मत एवं विचारों को निर्विवाद रूप से स्वीकार करने तथा सामाजिक कार्यों में उसके सर्वत्र योगदान को जिस प्रकार प्रतिष्ठित किया है वह यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि महर्षि के हृदय में नारी-जाति के प्रति कितना सम्मान का का भाव था और वे उसकी दशा को उन्नत बनाने में कितनी रूचि रखते थे।

स्वामी दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश के तृतीय एवं चतुर्थ समुल्लासों में नारी-उत्थान के लिये किये जाने वाले अनेक उपायों का विवरण दिया है। सर्वप्रथम वे नारी को वेदाधिकार से

वंचित करने वाले कपोल कल्पित "स्त्रीशूद्रोनाधीयाताम्" जैसे वाक्यों का खण्डन करते हुए शास्त्र-प्रमाण से यह सिद्ध करते हैं कि नारी को वेदादि शास्त्रों के अध्ययन का अधिकार स्वयं वेदों द्वारा ही दिया गया है। इस प्रसंग में उन्होंने यजुर्वेद के मन्त्र "यथेमां वाचं कल्याणी आवदानि जनेभ्यः" को उद्धृत किया है। साथ ही पुरा कालीन गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा, आदि ब्रह्मवादिनी नारियों के ब्राह्मण एवं उपनिषद् वर्णित प्रसंगों के आधार पर सिद्ध किया है कि भारत की विदुषि नारियां अध्यात्म-धर्म तथा दर्शन के क्षेत्रों में पुरुष वर्ग की ही भांति सदा व्युत्पन्न तथा प्रतिभाशालिनी रही हैं। न केवल परिवार एवं गृहस्थ के कार्यों में ही नारी को सर्वोपरि प्रतिष्ठा दी जाती रही है, अपितु स्वामी दयानन्द के अनुसार तो महाराजा दशरथ की प्रिय पत्नी कैकेयी की भांति नारियां युद्धक्षेत्र में भी जाती थीं और अपने पतियों की सहायता करती थीं। महाभारत का विदुलोपाख्यान इस प्रसंग में स्मरणीय है जहां वीर भावना जागृत करने वाली माता विदुला ने अपने कायर एवं भीरू पुत्र को पुनः शत्रु को पराजित करने के लिये प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया।

# मुक्ति–मार्ग

मुक्ति अर्थात् ईश्वर-प्राप्ति, ईश्वर की ओर जीव का आकर्षण हो कर उसके परमानन्द में तल्लीन हो जाना, यही मुक्ति का लक्षण है। इस प्रकार तल्लीन होने से सहज ही में हर्ष और शोक दूर हो कर सदानन्द-स्थिति प्राप्त होती है। सबको यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि ईश्वर की उपासना को छोड़कर चाहे कितने ही दूसरे कर्म किए जाएं उनसे आत्मा मुक्त नहीं होती। मुक्त होने के लिए जो कुछ है वह एक ईश्वर-प्राप्ति ही कारण है।

—o—

# सूक्तियां

शान्त रहे मन आपका पावन रहें विचार, अविरोधी सब जन रहे, सुख का हो विस्तार।
साहस रखिए हृदय में, जो सब सुख का सार, मन की शक्ति है अमरता जीवन का आधार।
मन की दुर्बलता तजो, विविध रोग आगार, दुःखसागर में मगन जो करें मृत्यु साकार।
उठिये प्रातः काल ही जो चाहो कल्याण, स्नान-ध्यान से शुद्ध हो तन-मन बने महान्।
केवल शिक्षा से नहीं मानव बने महान्, सदाचार की शक्ति से तन-मन हो बलवान्।

—o—

# तू किसका है

आत्म-ज्ञान से, आत्म-योग से आत्म-रुप को तू पहचान,
अणु-अणु में कण-कण में व्यापक ओम् की सत्ता को ले जान
सूक्ष्मातिसूक्ष्म, स्थूलातिस्थूल सब रूप चराचर उसका है।
सब जब उसका, तू भी उसका, जो उसका, वह उसका है।

# आर्यसमाज के १० नियम

## Ten Commandments of the Arya Samaj

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

   The first (efficient) cause of all true knowledge and all that is known through knowledge is Parameshwara (the highest Lord i. e. God)

2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्याक, सर्वान्तियामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है ।

   Ishwara (God) is existent, intellegent and blissful. He is formless, ominscient. just merciful, unborn, endless, unchangeable, beginingless, unequalled, the support of all, the master of all, omnipresent, immanent, unaging, immortal, fearless, eternal, holy and the maker of all. He alone is worthy of being worshipped.

3. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

   Vedas are the scripture of true knowledge. It is the first duty of the Aryas to read them, recite them and hear them being read.

4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

   One should always be ready to accept truth and give up untruth.

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

   One should do everything according to the dictates of Dharma i. e. after reflection over right and wrong.

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

   Doing good to the whole world is the primary object of this society i. e. to ensure its physical, spiritual and social upliftment.

7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए ।

Let the dealings with all be regulated by love and justice, in accordance with the dictates of Dharma.

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।

Dne should promote Vidya (realisation of subject and object) and dispel Avidya (illusion).

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

Dne should not be content with one's own welfare alone, but should look for one's own welfare in the welfare of all.

10. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें ।

Dne should regard oneself under restriction to follow altruistic rulings of society while in following rules of individual welfare all should be free.

---

## Devtasin Vedas

2. There is a description of many 'devtas' in the Vedas. What do you say to that ?

A. Anything having luminous properties is called 'devta' e.g. earth. But it is nowhere regarded as God or an object of worship. Vedic mantra says that all 'devas' subsist in God. They are mistaken who hold that 'devas' and God are synonymus. God is called 'Mahadev' or Supreme Deva, because he is the Lord of all devas creator, sustainer and dissolver of the whole universe. The great judge and the support of all. In Vedas, there is a mention of thirty three devas.

—Swami Dayanand Sarasawati

2. Does God forgive the sins of his devotees or not ?

A. No. If sins were to be forgiven. His justice would be tempered with and all men would become sinful. Mere prospects of forgiveness make men bold and courageous to commit sins. When a king pardons the failings of his men, they become bold and commit gross faults in the hope that when they would beseech him with folded hands and humble demeanour, he would forgive them. Even those who are inclined to crimes begin to commit them as they have no fear. The same holds good in the case of God. Therefore, to reward virtue and punish vice in exact proportion is the work of God, not to forgive sins.

—Swami Dayanand Saraswati

# जीवन की सार्थकता

पं. ज्ञानचन्द शास्त्री, (ओ. टी.)
पुरोहित आर्य समाज, सै.-32, चण्डीगढ़

"काकोऽपि जीवति चिराय बलिञ्च भुङ्क्ते"

संस्कृत-साहित्य की इस लोकोक्ति के अनुसार संसार में एक कौआ भी चिर काल तक जीता है और अपनी उदर-पूर्ति करता है लेकिन इसी प्रकार के आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि पाशविक वृति-मय मानवीय जीवन को जीवन नहीं कहा जा सकता।

वेद के पवित्र शब्दों में जीवन का ध्येय, जीवन की सार्थकता अथवा जिन्दगी की वास्तविकता इस प्रकार से हम सब मानवों के कल्याणार्थ कही गई है कि —उद्यानं ते पुरुष नावयानम् । हे पुरुष ! इस देह रुपी पुरी में शयन करने वाले जीवात्मन् ! (ते) तेरा (उत् यानम्) ऊपर जाना हो, ऊंचा उठना हो (अवयानम् न) नीचे गिरना वा नीचे जाना न हो।

जीवन की सफलता ऊपर उठने में है, ऊर्ध्व गामी होने में है; अध : पतन में नहीं। यह जीवन में उच्चता की प्राप्ति अथवा अधःपतन की स्थिति मनुष्य स्वयं ही अपने कर्मों से निर्माण करता है। क्योंकि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। गीता का निम्नलिखित श्लोक इस सम्बन्ध में सुन्दर प्रकाश डालता है।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् !
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः !!

अपने द्वारा अपने आत्मा को ऊँचा उठाये, आत्मा को नीचे न डुबावे। निश्चय से आत्मा ही अपने आप का बन्धु है और आत्मा ही अपने आप का शत्रु है। अत : मनुष्य अपने शुभाशुभ कर्मों के माध्यम से दैवी और आसुरी योनियों को प्रात होता रहता है शुभाशुभ कर्मों का ज्ञान जीव को परमात्मा की ओर से प्राप्त होता रहता है, महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि—

"आत्मा के भीतर से बुरे कर्म करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है। सप्तम समुल्लास :

मनुष्य कार्य करने में स्वतन्त्र है अत : वह अज्ञानतावश क्षणिक सुखों की प्राप्ति हेतु, ईश्वरीय इस अन्त : चेतावनी को उपेक्षित कर अशुभ कर्मों का शिकार हो जाता है।

पर-हिताभिलाषी ऋषियों ने भी मनुष्यों को कदम-कदम पर ऊर्ध्वगमन एवं अधःपतन के मार्गों से अवगत करा तथा "येनेष्टं तेन गम्यताम्" इन शब्दों द्वारा कर्तव्य निर्वाह किया।

मनुजस्य तु देहोऽयं क्षुद्रकामाय नेष्यते ।
इह कृच्छ्राय तपसे, प्रेत्यानन्त सुखाय च ।।

यह मनुष्य-शरीर नीच कार्यों के लिये नहीं है, अपितु इस जीवन में घोर तप-साधना करने तथा मोक्ष-प्राप्ति के लिये प्राप्त हुआ है।

सांसारिक उन्नति एवं पारलौकिक सिद्धि में ही जीवन की वास्तविकता निहित है। सांसारिक उन्नति में शारीरिक वैचारिक, व्यवहारिक एवं सामाजिक पहलुओं का समावेश है।

"अश्मा भवनु नस्तनु:" इस वेद-आज्ञा अनुसार हमारा शारीरिक उत्थान हो, साथ ही "तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु" वैचारिक उन्नयन भी।

"मित्रस्याहं सर्वाणि भूतानि समीक्षे"

प्राणी मात्र को मैं मित्र की दृष्टि से देखूं साथ 'अन्योऽन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या' हमारा पारस्परिक व्यवहार ऐसा हो कि जिस प्रकार से एक गौ अपने नवजात शिशु के प्रति करती है।

यह सांसारिक विकास पारलौकिक उन्नति का पूरक हो; उसमें सहायक हो न कि बाधक क्योंकि पारलौकिक सुख-प्राप्ति के अभाव में जीवन नकारात्मक रहता है।

लेकिन अद्‌भुत है यह इन्सानी जिन्दगी! जिस क्षणिक जीवन में भी मनुष्य वास्तविकता से हटा रहता है। किसी शायर ने सुन्दर चित्रण किया है कि—

फूल चुनने आये थे बागे हयात में।
दामन को खारे जार में उलझा के रह गये॥

मनुष्य इस जीवन रूपी बगीचे में उत्तम कर्म रूपी फूल चयन करने के लिये आया था लेकिन इस लुभावने उद्यान में विषय-वासना-भोग, रूपी तीखे कांटो में अपने वस्त्र को फंसा कर के ही रह गया। अर्थात् जिन्दगी के अनमोल क्षण व्यर्थ में गवां बैठा जिसके लिये कवि ने ठीक कहा है—

"जन्मेदं व्यर्थतां नीतं भव भोगोपलिप्सया"

आत्मिक उन्नति के अभाव आत्मिक बल की न्यूनता हैं जो जीवन की व्यर्थता को घोषित करते हैं। आत्मिक खुराक की कमी से आत्मा का दुर्बल होना स्वाभाविक ही है। प्रभु की श्रद्धापूर्वक भक्ति, प्रतिदिन आत्मचिन्तन यह ऐसा आत्मिक भोजन है जो आत्मा को ऊंचा उठाता है; बलिष्ठ बनाता है और जीवन को सार्थकता भी प्रदान करता हैं।

इसी के साथ ही "परोपकार व्यसनं हि जीवितम्" अर्थात् पर-हित धर्म परायण व्यक्ति का जीवन ही जीवन है। "आत्मार्थे को न जीवति"—धिक्कार है ऐसे जीवन को जो अपने लिये ही जीया जाता है।

जीवन की सार्थकता में साधना-रत व्यक्ति ईश्वर से केवल एक ही कामना करता है कि—

सफल जीवन हो वर परमात्मन्! तुम से जो यह पाऊं।
पराई आग में कूदूं पराई मौत मर जाऊं॥
किसी के हित की खातिर गर हों इस जिस्म के टुकड़े।
मैं हंसते-खेलते अपने तन को कटवाऊं॥

ऐसा व्यक्तित्व ही अपने इस नश्वर देह-त्याग के पश्चात् भी अपनी यश:काया से सदैव जीवित रहता है। "कीर्तिर्यस्य स जीवति" धन्य है ऐसा जीवन। सफल है वह जीवन जो भूले-भटके मुसाफिरों को प्रकाश स्तम्भ के रूप में राह दिखाये।

# "स्तुति"

(प्रस्तुत कर्ता-श्री पं. सत्यव्रत शास्त्री)

प्राणों के प्राण हे प्राणनाथ; सब दुःख छुड़ाने हारे हो ।
सुख स्वरुप निज उपासकों को सुख देने हारे हो ॥
सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न किया ऐश्वर्य सकल तुम देते हो ।
सुर्य चन्द्र अरू तारागण को भी प्रकाश तुम देते हो ॥
कामना करने योग्य हो सबके विजय कराने हारे हो ।
अति श्रेष्ठ हो ग्रहण योग्य हो ध्यान में लाने हारे हो ॥
सब क्लेशों को भस्म हो करते शुद्ध स्वरूप पवित्र हो तुम ।
धारण करें सभी हम तुम को, धारण करते जग को तुम ॥
उत्तम-गुण-कर्म-स्वभावों में सबकी मति प्रेरित करते ।
इसीलिए सब स्तुति, प्रार्थना अरू उपासना हम करते ॥
तुम से भिन्न किसी को स्वामी इष्ट देव ना हम माने ।
आप तुल्य न अधिक किसी को इस दुनिया में हम जानें ॥

सकल संसार के कर्त्ता हो तुम सर्वस्व के दाता,
परम गुरू हो पिता हो देवता हो तुम जगन्माता ।
हमारे पाप पुण्यों का सदा फल आप देते हो,
हैं जितने दुर्व्यसन सभी हर आप लेते हो ।
भले कामों में होते हो सहायक, न्याय करते हो,
अनाथों, दीन, विधवाओं के संकट, आप हरते हो ।
भलाई वा बुराई करने में, हैं स्वाधीन हम सारे,
किए कर्मों का फल देते यथाविधि आप हो प्यारे ।
करें सत्कर्म, करने की मिले शुभ प्ररेणा भगवन्,
यही है प्रार्थना हम आर्य पुरूषों की सदा भगवन् ।

# प्रारम्भिक संस्कारत्रय का सर्वेक्षण

पं. उमेश कुमार शास्त्री, एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत)
पुरोहित व वेद-प्रचार अधिष्ठाता,
आर्यसमाज सैक्टर 7-बी, चण्डीगढ़

अपने जीवन में हम हर क्षण ऐसा अनुभव करते हैं कि नियंत्रण एक ऐसा प्रावधान है जिससे यथेष्ट उपलब्धि होती है चाहे जिस दिशा में यह नियन्त्रण हो पाता हो। नियन्त्रण का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। नियन्त्रण का एक अर्थ अनुशासन भी है तो प्रश्न यह है कि व्यक्ति अपने आप पर नियन्त्रण प्राप्त कर अनुशासित कैसे हो। हम अधिकाधिक उपलब्धि ग्रहण कर सकते हैं जब हम स्वयं को नियन्त्रित करना सीख लें। हमारा उद्देश्य है-जीवन को धर्मार्थकाममोक्ष की प्राप्ति से जोड़ दें। पर यह तब पूरा होगा जब इस उद्देश्यचतुष्ट्य को सिद्ध करने के लिए आवश्यक तत्त्वों की यथावत् प्रयोगविधि हम सीखें तथा करें। इस उद्देश्य-सिद्धि की दिशा में स्वात्मा को अधिकाधिक संस्कारित होना आवश्यक है। आत्मा उत्तम कर्म-विधि से जब संस्कारित होता है तो सुख बढ़ता है पर जब आत्मा नीच कर्म से प्रभावित होता है तो दुःख ही बढ़ता है अत एव हमें सदैव अच्छे कर्म करने की शिक्षा लेनी चाहिए।

स्वयं को संस्कारित करने के लिए आत्मनियंत्रण चाहिए और आत्मनियंत्रण का गुण संस्कार से ही उत्पन्न हुआ करता है। हमारे ऋषि-महर्षि, आचार्य-विद्वानों ने अत्यन्त शिष्ट-पुष्ट चिन्तनोपरान्त सोलह संस्कारों द्वारा हमारे सारे जीवन को नियन्त्रित करने का विधान किया है। इन संस्कारों का उद्देश्य केवल मात्र व्यक्ति को ही नियन्त्रित करना नहीं अपितु समाज व राष्ट्र को भी नियन्त्रित करना है। पर समाज की नींव तो व्यक्ति ही है न, और ये संस्कार उत्तम संतत्ति के लिए विशेष उपयोगी हैं। यही संतत्ति भावी व्यक्ति बनकर समाज व राष्ट्र का निर्माण करेगी। अपने-अपने स्थान पर सभी संस्कार महत्त्वपूर्ण हैं पर मैं सबकी चर्चा नहीं करना चाहता। यहां तो मैं सिर्फ प्रारम्भ के तीन संस्कार जो [प्रायः जनसाधारण से लुप्त हो चुके हैं, उन्हें प्रकाश में लाना चाहूंगा क्योंकि ये तीन संस्कार सारे संस्कारों के मूल हैं-यथा मानव शरीर में रीढ़ की हड्डी। इन संस्कारों की यथावत् जानकारी न होने से आज हमारी संतत्ति का ह्रास हो रहा है तथा हम प्रायः संतित्त-जगत् से दुःखी नजर आते हैं। सभ्य, श्रेष्ठ, बुद्धिमान्, धार्मिक व विद्वान्, संतत्ति का आज अत्यन्त अभाव है। कभी भारतवर्ष आध्यात्मिक क्षेत्र में पूरे संसार का गुरू समझा जाता था और कोई काल था जब यह उद्घोषणा हुआ करती थी।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रज जन्मन:
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरण पृथिव्या: सर्वमानवा:

—मनुस्मृति

**ग्रौर ग्राज** हम रो रहे हैं यह कह कर:—

हम कौन थे, क्या हो गये ग्रौर क्या होंगे ग्रभी
ग्राग्रो विचारें, ग्राज मिलकर ये समस्याएँ सभी।

**—मैथिली शरण गुप्त**

इस ग्रध:पतन का कारण यह है कि प्रारम्भ से ही सन्तान को सुसंस्कृत बना कर जीवन में नियन्त्रण एवं ग्रनुशासन की ग्राधारशिला रखने पर ध्यान नहीं दिया जाता। इतना होने पर भी हम सो रहे हैं। ग्राईए विचार करें कि वे कौन से तीन संस्कार हैं जिसकी महत्ता पर विचार करना है। यह संस्कारत्रय है: गर्वाधानपुंसवन-सीमन्तोनयन जो प्राय: परिवार की संस्कार-चर्या से ग्रोझल है। परिवार पुरोहित के पास तब पहुंचता है जब भला-बुरा परिणाम घोषित हो जाता है। ग्रच्छा परिणाम हो इसके लिए तो परिवार पहले से कोई ध्यान नहीं देता जिससे कोई तैयारी भी नहीं कर पाता। बिना तैयारी या बिना देख-रेख की तैयारी से ही संतत्ति का प्रारंभिक निर्माण लोग दोष पूर्ण बना डालते हैं। यदि कोई उत्तम सतत्ति चाहता हो तो यथाकाल यथानिर्देश सभी संस्कार होने ग्रावश्यक हैं। पहले गर्भाधान संस्कार पर विचार करेंगे। यह संस्कार सब संस्कारों का बीज है ग्रत: बीज में शुद्धता होनी चाहिए ग्रन्यथा भावी सभी परिणाम दोषपूर्ण ही होंगे।

यह एक ऐसा संस्कार है जिसे सम्पन्न करते-करवाते लोग व्यंग्य, हंसी व शर्म का विषय समझतें हैं पर संस्कार तो संस्कार है उसे विधिवत् सम्पन्न करने-करवाने में शर्म, व्यंग्य व हँसी का कोई गुंजाईश ही नहीं है। सभी संस्कारों की बड़ी ही शिष्ट शैली व पद्धति है, ग्रत: शर्म व ग्रन्य बातों का कोई स्थान नहीं है। सिर्फ मन में भ्रम हो सकता है वा ग्रज्ञानतावश भी कार्य खराब होते हैं। ग्रत: ज्ञानपूर्वक साफ दिल से प्रसन्नतापूर्वक ग्रगर संतान को प्रारम्भ से उत्तम संस्कार दिये जाएं तो सतत्ति भी सर्वत्र व सर्वदा यथेच्छ ही हों। इस संस्कार को पुत्रेष्टि भी कहा गया है। "गभस्याधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्" ग्रर्थात् जिससे गर्भ का धारण-गर्भाशय में वीर्य की स्थापना करना होता है। यह भी एक शुभ संस्कार है; प्रसन्नतादायक सस्कार है। ऋषि लिखते हैं –जैसे बीज ग्रौर क्षेत्र के उत्तम होने से ग्रन्नादि पदार्थ उत्तम होते हैं, वैसे उत्तम बलवान् स्त्री-पुरुषों से उत्पन्न सन्तान भी उत्तम होती है। इस कारण पूर्ण युवावस्था पर्यन्त **यथावत् ब्रह्मचर्य** का पालन तथा विद्याभ्यास करके ग्रर्थात् न्यून से **न्यून 16 वर्ष की कन्या** ग्रौर 25 वर्ष का पुरुष ग्रवश्य हो ग्रौर इससे ग्रधिक बय वाले होने से ग्रधिक उत्तमता होती है क्योंकि बिना सोलहवें वर्ष के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने के लिए ग्रथवा गर्भ के धारण-पोषण का सामर्थ्य कभी नहीं होता। ग्रौर 25वें वर्ष के बिना वीर्य भी उत्तम नहीं होता। -संस्कार विधि-स्वामी दयानन्द सरस्वती।

जितना सामर्थ्य 25वें वर्ष में पुरुष के शरीर में होता है उतना ही सामर्थ्य 16वें वर्ष में कन्या के शरीर में हो जाता है इस लिए पूर्वोक्त ग्रवस्था में दोनों को समवीर्य ग्रर्थात् तुल्य सामर्थ्य वाले जानें। सावधानी के तौर पर ऋषिवर ग्रागे लिखते हैं—

सोलह वर्ष से न्यून की स्त्री में यदि पच्चीस वर्ष से कम अवस्था का पुरुष गर्भाधान करता है तो वह गर्भ उदर में ही बिगड़ जाता है और जो उत्पन्न भी हो तो अधिक नहीं जीवे अथवा कदाचित् जीवे भी तो उसके अत्यन्त दुर्बल शरीर और इन्द्रियां हों। यह मौलिक सुधार है जो हर समाज-परिवार में अपेक्षित है। आजकल भारतीय विधि व्यवस्था के अनुसार कन्या की न्यून्तम् आयु 18 वर्ष तथा वर की न्यून्तम 21 वर्ष होना आवश्यक है। यहां पर ऋतुदान अर्थात् गर्भाधान काल का भी उल्लेख करना आवश्यक है क्योंकि 99% गृहस्थ परिवार इस विषय में भ्रमित हैं। ऋतुदान ऋतुकाल में ही करना चाहिए। विभिन्न ऋषियों का मत करीब-एक जैसा ही है जो सार रूप में यहां दिया जाता है।

स्त्रियों का स्वाभाविक ऋतुकाल 16 रात्रि का है पर इनमें भी जो निषिद्ध रात्रियां हैं वे इस प्रकार हैं: रजस्वला होने के बाद प्रथम चार रात्रि अथवा जब तक स्त्री रजस्वला बनी रहे अर्थात् जब तक स्त्री के शरीर से रज: (विकृत उष्ण रूधिर) निकलता रहे; अपरिहार्य अनिवार्य निषिद्ध हैं क्योंकि इन रात्रियों में समागम करना महारोग कारक है तथा व्यर्थ भी है, बल्कि इन रात्रियों में स्त्री-पुरुष का परस्पर स्पर्श भी न हों। स्त्री एकान्त सेवी हो, इसी प्रकार रजोदर्शन के बाद ग्याहरवीं और तेहरवां रात्रि भी निन्दित है। बाकी दशों रात्रियां ऋतुदान के लिए श्रेष्ठ हैं। इनमें भी अगर पूर्णमासी, अमावश्या चतुर्दशी व अष्टमी आवे तो इनमें स्त्री-पुरुष रतिक्रिया न करें। साथ ही स्त्री-पुरुष दिन में भी रतिक्रिया कभी न करें। यह भी महारोगकारक तथा संतत्ति पर बुरा संस्कार डालने वाला है।

विशेष ध्यान देने योग्य जो बात है वह यह है कि पुत्र व पुत्री का जन्म देना अपने अधिकार में है यदि सर्वथा यथानिर्देशित क्रिया की जावे। महाराज मनु के श्लोकों का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि जिनको पुत्र की इच्छा हो वे 6ठी, 8वीं, 10वीं, 12वीं, 14वीं, और 16वीं ये छः रात्रि ऋतुदान में उत्तम जानें और इनमें भी उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं अर्थात् सर्व श्रेष्ठ रात्रि 16वीं है, फिर क्रम से 14वीं, 12वीं, 10वीं, 8वीं और 6ठी है। इसी प्रकार जिनको कन्या की इच्छा हो वे 5वीं, 7वीं, 9वीं, 15वीं ये चार रात्रि ही उत्तम जानें। अत एव पुत्र चाहने वाले युग्म रात्रियों (Even Nights) में ही समागम करें। रात्रि-गणना कोई मुश्किल कार्य नहीं है। जिस दिन रजोदर्शन हुआ उसी दिन से गणना की जाए। उसी दिन की जो 6ठी 8वीं, 10वीं, 12वीं, 14वीं और 16वीं रात्रि आवे उनमें पुत्र चाहने वाले दम्पत्ति समागम करें। इसी तरह पुत्री चाहने वाले भी उसी दिन से गिनकर उपरोक्त रात्रियों में समागम करें। समागम काल प्रहररात्रि गये के बाद से प्रहर रात्रि रहे तक है। पुरुष के अधिक वीर्य होने से पुत्र और स्त्री के अधिक आर्त्तव होने से कन्या, तुल्य होने से नपुंसक पुरुष व वन्ध्या स्त्री तथा क्षीण व अल्पवीर्य से गर्भ का न रहना व रहकर गिर जाना होता है। उपरोक्त निन्दित रात्रियों में जो स्त्री-पुरुष रतिक्रिया नहीं करते वे गृहस्थाश्रम में रहकर भी ब्रह्मचारी कहाते हैं।

पुरुष-स्त्री अपने वीर्य-आर्त्तव (Strenghth) बढ़ाने हेतु सुयोग्य वैद्य का सहारा लेवें। जैसा

निर्देश वैद्य करे वैसा ही आहार सेवन करे ताकि उत्तम संतान की प्राप्ति हो क्योंकि संतान की उत्तमता सर्वाधिक आहार पर निर्भर करती है। वैद्य की देख-रेख में बल-बुद्धि बढ़ाने हेतु सर्वौषधि का सेवन करना चाहिए। मद्यमांसादि कभी न सेवन करें। आहार-ज्ञान के लिए संस्कार विधि कृत स्वामी दयानन्द सरस्वती, भी द्रष्टव्य है।

जिस रात्रि गर्भाधान करना हो, पूर्व दिन में ही प्रातः काल या सांयकाल संस्कार-पुत्रेष्टि-यज्ञ विद्वान् पुरोहित की देख-रेख में यथानिर्दिष्ट सुगन्धादि पदार्थों के साथ सम्पन्न करना चाहिए। यज्ञ के लिए आवश्यक मन्त्रों की आहुतियां तथा विधिगत् क्रियाएँ सभी पुरोहित की देख-रेख में ही होंगी। अत: समय पर पुरोहित से सम्पर्क करना चाहिए तथा जैसे पुरोहित का निर्देशन हो, वैसे करें।

द्वितीय संस्कार पुँसवन कहा जाता है। ऋषि-मन्तव्य है कि अगर स्त्री-पुरुष को ऐसा दृढ़निश्चय हो जाए कि गर्भ स्थिर हो गया तो उसके दूसरे दिन और यदि निश्चय न हो तब एक मास बाद स्त्री रजस्वला न हो तो निश्चित जानना कि गर्भ स्थिर हो गया है, तभी पुंसवन काल दूसरे दिन वा दूसरे महीने के प्रारम्भ में पूर्व भी कुछ विशेष मंत्रों से आहुतियां दी जावें जिन्हें संस्कार विधि में स्वामी जी ने गर्भाधान संस्कार के अंतिम भाग में उद्धृत किये हैं, यथा वातः पुष्करिणी0 – इत्यादि सात मंत्र हैं जो पूर्व के तीन मंत्र ऋग्वेद, फिर दो मंत्र यजुर्वेद तथा अंतिम दो मंत्र सामवेद के हैं। पुंसवन संस्कार तीसरे मास में भी किया जा सकता है।

यदि इतने किये पर भी गर्भ न स्थिर हो तो वैद्यक औषधि लेनी चाहिए। फिर अनुकूल स्थिति में क्रमशः दो माह बाद इसी प्रकार ऋतुदान ऋतुकाल में ही करें। यदि फिर भी क्रिया निष्फल जाए तो तीसरे मास जब ऋतुकाल आवे तब पुष्य नक्षत्र वाले ऋतुकाल दिवस में पहले प्रातः काल आने पर पहली प्रसूता गाय के दही का दो माशा एवं (जौ) के दानों को सेंककर पीसकर उससे दो माशा ही लेकर दोनों को मिलाकर पत्नी के हाथ में देकर पत्नी से ही पति पूछे-"किं पिबसि" ऐसी क्रिया तीन बार करे। उत्तर में पत्नी भी तीन बार ही क्रमशः 'पुंसवनम्" कहे और उसका प्राशन करे अर्थात् पी जाए। इस रीति से पुनः-2 तीन बार विधि करना चाहिए। पश्चात् सङ्खाहूली और भटकाई औषधि को जल में महीन पीसकर उसका रस कपड़े में छानकर पति अपनी पत्नी के दाहिने नाक के छिद्र में सिंचन करे और परमात्मा से प्रार्थना करके यथोक्त ऋतुदान विधि पुनः करे। ऐसा पारस्कर गृह्यसूत्रकार का मन्तव्य है। पुंसवन भी विधिवत् विद्वान् पुरोहित की देख-रेख में करके स्त्री सुनियम मुक्ताहार-विहार करे। विशेषकर गिलोय, ब्राह्मी औषधि और सुंठी को दूध के साथ थोड़ी-थोड़ी खाया करे। अधिक शयन व भाषण न करे। अधिक खारा खट्टा, तीखा, कड़वा, रेचक आदि न खाये। सूक्ष्म आहार करे। क्रोध-द्वेष-लोभादि में न फंसे, चित्त को सदा प्रसन्न रक्खे इत्यादि शुभाचरण करे जिससे कि श्रेष्ठ उत्तम संतान का जन्म हो।

निबन्ध की अंतिम कड़ी सीमन्तोनयन संस्कार को जानना है। यह संस्कार गर्भ मास से चौथे, छठे, आठवें मास में शुक्ल पक्ष मूल आदि पुरुष नक्षत्रों से युक्त चन्द्रमा हो जिस दिन, उसी दिन सीमन्तोनयन संस्कार किया जाए। इससे गर्भिणी स्त्री का मन संतुष्ट, आरोग्य तथा स्थिर हुआ गर्भ उत्कृष्ट होता है और प्रतिदिन यथावत् बढ़ता जाता है। यह संस्कार भी विद्वान् पुरोहित की देख-रेख में विधिवत् सम्पन्न होना चाहिए।

ये संस्कार अत्यन्त वैज्ञानिक हैं। गर्भाधान व पुंसवन संस्कार में विशेषतः पौष्टिक, सात्त्विक आहारों, व्यवहारों व आचरणों पर जोर दिया गया है। उत्तम आहार-विहारों से संतान उत्तम बनेगी; यही ख्याल है। पुंसवन में तो एक स्थान पर वट-वृक्ष के पल्लव के साथ क्रिया-विधि है। गिलोय आदि का समावेश है, ब्राह्मी औषधि का भी। ये सारी चीजें पौष्टिक व सात्त्विक, बलकारी व बुद्धिकारी हैं। सीमन्तोनयन में पति-पत्नी का व्यवहार परस्पर मधुर वार्तालाप करना आदि तथा अंत में सभी उपस्थित सज्जन नर-नारियाँ व ब्राह्मणपत्नियाँ गर्भिणी स्त्री से मधुर वार्तालाप करें, आशीर्वाद दें आदि-2 सभी कार्य स्त्री को प्रसन्न रखने के तथा गर्भ स्थित संतान को उत्तम संस्कार देने के ही व्यवहार हैं।

इस प्रकार संक्षिप्तः प्रारम्भिक तीनों संस्कारों को उभारा है। हर परिवार में ये संस्कार बिना शर्म तथा व्यंग्य के विधिवत् सम्पन्न हों जिससे सबको यथावत् संतति-लाभ हों। वैदिक धर्म में प्रत्येक संस्कार अपनी समान गरिमा को सदा लिये रहता है अतः संस्कारों से आलस्य नहीं वर्णसंकर सदा सतर्क रहें और यथाकाल सभी संस्कार सम्पन्न हों जिससे सर्वत्र सुख-शान्ति-ऐश्वर्य व उत्तम संतति का बोलबाला हो।

# महर्षि दयानन्द

प. दिनेश्वर आर्य
हरिराम छात्रावास,
सैक्टर-8 सी, चण्डीगढ़

जब कभी अनीति और अत्याचार अपनी सीमा को लांघ जाते हैं, अधर्म बढ़ जाता है, स्वार्थ का राग चहुं ओर प्रबल हो उठता है, समाज का मार्ग अन्धविश्वासों से अवरुद्ध हो जाता है तभी कोई विभूति जन्म लेकर समाज में क्रान्ति कर के अत्याचार, अनाचार और अनीति के जाल को छिन्न-भिन्न किया करती है। ऋषि दयानन्द की गणना भी ऐसी ही विभूतियों में की जाती है। वे भारत वर्ष के रंग-मंच पर उस समय अवतरित हुए जब देश सामाजिक राजनैतिक तथा धार्मिक आदि सभी दृष्टियों से अवनति की ओर जा रहा था व परतन्त्रता का अन्धकार सिमिट-सिमिट कर घोरतर होता जा रहा था। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द ने समाज-सुधारक के रूप में जो कार्य किया वह सराहनीय है।

गुजरात की पुनीत भूमि ने गांधी जैसे रत्न को जन्म दिया जिसने देश के स्वाधीनता-संग्राम में अपूर्व योगदान दिया। इसी ही पुण्य-भूमि में ऋषि दयानन्द का जन्म टंकारा नामक स्थान में हुआ। पिता ने उनका नाम मूलशंकर रखा। उनके पिता तहसीलदार के पद पर नियुक्त थे। वे अत्यन्त श्रद्धालु और शिव के अनन्य भक्त थे। ऐसे संस्कारों का प्रभाव स्वामी जी पर पड़ना स्वाभाविक ही था। वे विद्यार्थी जीवन में ही अत्यन्त प्रतिभाशाली और चिन्तनशील बालक थे। उन्होंने शीघ्र ही कई शास्त्रों और ग्रन्थों का अध्ययन और मनन कर अपने मस्तिष्क में अपरिमित ज्ञान का संचय किया।

जिस वातावरण में बालक का पालन-पोषण हुआ उनको देखकर यही अनुमान लगाया जा सकता है कि वे भी अन्य ब्राह्मणों की भांति ही सांसारिक क्षेत्र में जीवनयापन करेंगे किन्तु एक घटना हुई जिसने उनके जीवन को मोड़ दिया। उनकी तत्त्वभेदी दृष्टि ने बहुत बड़े अन्ध विश्वास के आवरण को देख लिया। वे समझ गए कि इस अन्धविश्वास के रहते हुए सत्य का अन्वेषण नहीं किया जा सकता। संसार को इस अन्धकार से निकालना ही होगा। यह घटना बड़ी साधारण-सी थी। महान् व्यक्तियों के जीवन में साधारण घटनाएं ही क्रांतिकारी परिवर्तन ला देती हैं। अभी 14 वर्ष के ही थे कि उनके पिता ने शिवरात्रि का व्रत रखने का आदेश दिया। बालक अत्यन्त श्रद्धा के साथ शिव के मन्दिर में मूर्ति के आगे रात भर जागता रहा। अन्य सभी भक्त सो गए लेकिन बालक मूलशंकर इस व्रत के रहस्य को जानना चाहता था। उन्होंने देखा कि शिव की मूर्ति पर कुछ चूहे दौड़-धूप कर रहे हैं और रखी हुई मिठाई को बड़े आनन्द से खा रहे हैं। अन्य कोई बालक शायद इस घटना को आंखों से ओझल कर देता पर बालक मूलशंकर के ऊपर इस घटना का अमिट प्रभाव पड़ा। उन्होंने सोचा कि यदि यही अनन्त शक्ति-पुंज शिव है तो यह चूहों से अपनी रक्षा करने में क्यों असमर्थ है और यह अपने अन्य भक्तों का कैसे उद्धार कर सकता है? उन्हें मूर्तिपूजा से एकदम अश्रद्धा हो गई। उन्होंने सच्चे शिव की खोज की ठान ली। इस घटना ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल कर रख दिया।

जब कभी महान् आत्मा को ज्ञान की ज्योति मिलती है तो उसके लिए अधिक से अधिक पृष्ठ भूमि तैयार होती जाती है। उन्हीं दिनों बालक मूलशंकर के चाचा और बहिन की मृत्यु हो गई। घर में रोना-कलपना शुरू हो गया। अब उनके मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि यह मृत्यु क्या है ? इसका रहस्य क्या है ? उनका चित्त उद्विग्न हो उठा। यही उद्विग्नता कभी महात्मा बुद्ध के हृदय में उत्पन्न हुई थी। बालक मूलशंकर ने सच्चे शिव की प्राप्ति और मृत्यु के रहस्य को समझने के लिए सब कुछ ठुकरा कर जंगल की राह ली। उन्होंने बीस-पच्चीस वर्ष तक जो साधना की उसके उदाहरण इतिहास में कम ही मिलते हैं। उन्होंने असंख्य विपत्तियों को सहन किया। भयंकर जंगलों में जहां कहीं भी सच्चे गुरू की मिलने की आशा होती वहीं पहुँच जाते। अन्त में भटकते हुए वे मथुरा पहुंचे जहां उनकी भेंट दण्डी विरजानन्द से हुई। उनके चरणों में बैठकर उन्होंने शिक्षालाभ किया। गुरू विरजानन्द लौकिक चक्षुओं से हीन थे पर उनके भीतर ज्ञान का अजस्र स्रोत प्रवाहित हो रहा था जो ऋषि-दयानन्द की ज्ञान-पिपासा को शांत कर सकने में समर्थ हुआ। गुरू विरजानन्द ने उनसे दीक्षा रूप में यही चाहा कि उन्होंने जो ज्ञान लाभ किया है वह उसका देश भर में प्रचार करे और अंधविश्वास व सामाजिक कुरीतियों का नाश करें। ऋषि दयानन्द ने ऐसा ही किया। उन्होंने देश भर का भ्रमण कर अज्ञान और अन्धविश्वास को मिटाने के लिये ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित की जिससे देश कृत-कृत्य हो गया।

अब ऋषि दयानन्द का कार्यक्षेत्र निश्चित हो गया। उन्होंने अपने गुरू के आदेश को शीश पर धारण किया और चल पड़े प्रचार के लिए। उन्होंने देश भर में घूम कर लोगों में फैले अन्धविश्वास, अज्ञान और भ्रमों को दूर करने के लिए अपना दिव्य सन्देश दिया। उन्होंने जनता को पुराने संस्कारों से निकालने के लिए प्रेरणा दी। उन्होंने समझाया कि ईश्वर न तो मूर्ति-पूजा से मिल सकता है और न ही किसी अन्य आडम्बर से। उन्होंने कहा कि भगवान् सर्वत्र हैं। उसमें श्रद्धा रखो और सभी जीवों से समता का तथा सहानुभूति का व्यवहार रखो। उन्होंने कहा कि दलित और अछूत सभी जीव उसी ईश्वर के हैं अत: उनसे समता का व्यवहार करना ही ईश्वर की पूजा है। जन्म से नहीं; कर्म से ही कोई व्यक्ति छोटा या बड़ा बनता है। स्त्रियों के उद्धार के लिए भी उन्होंने भरसक प्रयत्न किये। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने प्राचीन पद्धति का समर्थन किया। उन्होंने दुरा-चारियों, पाखंडियों की सदैव निन्दा की और उन्हें देश और जाति का सबसे बड़ा शत्रु माना।

स्वामी जी राष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपना कर ही आगे बढ़े। एक ओर उन्होंने समाज में अन्धविश्वास का विरोध किया तो दूसरी ओर भारतीय संस्कृति का जन-जन तक प्रचार किया। अंग्रेज पादरी ईसाई-धर्म का प्रचार कर रहे थे। स्वामी जी समझ गए कि ये सब बातें भारत की अखण्डता में बाधक हैं। उन्होंने देखा कि लोग पश्चिमी सभ्यता को अपनाकर अपनी संस्कृति का ह्रास कर रहे हैं। भला वे इस अराष्ट्रीयता को कैसे सहन करते ? वे जानते थे कि जब तक मनुष्य की आत्मा का विकास नहीं हो जाता और वह सात्त्विकता के धरातल पर नहीं आ जाता तब तक स्वतन्त्रता की कामना नहीं की जा सकती। अत: उन्होंने अराष्ट्रीयता का डटकर विरोध किया। उन्होंने ऐसी राष्ट्रीयता को जन्म दिया जो देश को स्वतन्त्र कराने में बहुत सहायक हुई। उन्होंने देखा कि भारत के लोगों से अंग्रेजी सरकार कितनी विषमता से भरा व्यवहार करती है। उनके हृदय ने विद्रोह किया। स्वामी जी राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास करना चाहते थे। उनकी दृष्टि में यही भाषा राष्ट्रभाषा बनने की अधिकारिणी थी। इसी उद्येश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी का

प्रचार किया और देवनागरी लिपि अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने स्वयं भी अपने ग्रन्थों की रचना हिन्दी और संस्कृत भाषा में की।

महर्षि दयानन्द ने अपने सिद्धान्तों को स्थाई रूप देने के लिए आर्यसमाज की स्थापना सबसे पहले बम्बई में सन् 1875 ई० में की। आर्यसमाज देश भर में संगठन के प्रचार का बहुत बड़ा साधन है। स्वामी दयानन्द के पद-चिन्हों पर चलकर असंख्य बिभूतियों ने, जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, स्त्री-शिक्षा का प्रचार, बाल-बिवाह का विरोध, अछूतोद्धार की भावना, राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार तथा लोगों में सच्ची राष्ट्रीयता का प्रचार और प्रसार करना। आदि ही उनके मुख्य कार्य रहे हैं। आर्य-समाज आज भारतवर्ष में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में सबसे बड़ी रचनात्मक संगठन माना जाता है।

महर्षि दयानन्द एक उच्च कोटि के साहित्यकार भी थे उन्होंने वेदों के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांतियों का खंडन करते हुए उन पर तर्क-संगत भाष्य किया। प्रत्येक दृष्टि से उन्होंने नवीनता का प्रतिपादन कर उसे वास्तविकता और वैज्ञानिकता के निकट लाकर ग्राह्य बना दिया। उनकी सबसे बड़ी प्रसिद्ध रचना जो उनकी कीर्ति का आलोक-स्तम्भ है, वह है उनका "सत्यार्थ प्रकाश"। इसमें कई मत-मतांतरों का तर्क पूर्ण ढंग से विवेचन तथा शिक्षा, ईश्वर राजधर्म, मनुष्य के जीवन को उत्तम बनाने के लिए मौलिक विचारों का प्रतिपादन किया गया है।

संसार में कुछ लोग मानवता के शत्रु होते हैं। महर्षि दमानन्द को कई बार मारने का प्रयत्न भी किया गया। कहते हैं कि जोधपुर के महाराज की एक वेश्या ने उनसे अपनी कठोर निन्दा सुनी तो वह तिलमिला उठी और उसने स्वामी दयानन्द के प्राण लेने का षड़यन्त्र रचा। उस दुष्टा ने रसोइये से मिलकर स्वामी जी को जहर दिलवा दिया जिससे उनके शरीर में विष फैल गया। उनको बचाने के लिए बड़े प्रयत्न किये गये लेकिन सब असफल हो गए। वे 30 अक्तूबर, सन् 1883 को निर्वाणको प्राप्त हुए।

आज ऋषि दयानन्द हमारे मध्य में नहीं हैं लेकिन उनके सिद्धांत आज भी भूली-भटकी मानवता को राह दिखा रहे हैं। उन्होंने जो ज्योति प्रज्वलित की है वह युगों तक अमर रहेगी। संस्कृत के एक विद्वान् ने उपरीलिखित बातों को सार रुप में इस प्रकार कहा —

जनिष्टकारायां शिवरजनिजन्याखुघटनां
गृहे मृत्योर्दृश्यं, विपिनगमनं योगिमिलनम्,
गुरोरिच्छापूर्ति: प्रसृतबहुपाखण्ड-दलनम्
विषं पीत्वा मुक्तिर्यतिबर दयानन्द चरितम्।

◈◈◈

# शोक–प्रस्ताव

आर्यसमाज सेक्टर-7 निम्नलिखित आर्यजनों के असामयिक निधन पर शोक प्रकट करता है। इनके निधन से आर्यजगत् को ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति कठिन है। आर्यसमाज शोक-सन्तप्त परिवारों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत् आत्माओं को चिर शान्ति दें :—

1. धर्मपत्नी श्री सरदारी लाल मल्होत्रा, 1198, सैक्टर 8 सी, चण्डीगढ़
2. श्री विनय सुपुत्र श्री अमरनाथ अग्रवाल, 3024, सैक्टर 20-डी, चण्डीगढ़
3. माता श्री नरेश जैन, 1789, सैक्टर 7-सी, चण्डीगढ़
4. पिता श्री शिवनाथ रविकान्त, 69, सैक्टर 9-ए, चण्डीगढ़
5. श्री योगेन्द्र अरोड़ा, 1468, सैक्टर 43, चण्डीगढ़
6. पिता व माता श्री पवन कुमार, 1779, सैक्टर 7-सी, चण्डीगढ़
7. धर्मपत्नी श्री प्रेम स्वरूप भाटिया, 1906, सैक्टर 7-सी, चण्डीगढ़
8. माता श्री विश्व मित्र, 165, सैक्टर 27-ए, चण्डीगढ़
9. माता श्री के०के० अग्रवाल, 766, सैक्टर 8-बी, चण्डीगढ़
10. पिता श्री जय देव वर्मा, 283, सैक्टर 10-ए, चण्डीगढ़
11. श्री भगत राम, 578, सैक्टर 8-बी, चण्डीगढ़
12. पिता श्री दत्त, 1533, सैक्टर 7-सी, चण्डीगढ़
13. श्रीमती लीलावती जौहरी माता श्री सत्येन्द्र नाथ, 203, सैक्टर 9-ए, चण्डीगढ़
14. श्रीमती सुभ्रा स्वरूप, 1193, सेक्टर-7, पंचकूला
15. पिता श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सक्टर-7, पंचकूला
16. श्री विद्या प्रकाश, 1828, सैक्टर 34-डी, चण्डीगढ़
17. श्री बी०के० दीवान 18, सैक्टर-10 ए, चणीगढ़
18. श्रीमती ऊषा सचदेव पुत्रवधू श्रीमती सत्या सचदेवा
19. श्रीमती ठाकुरी देवी 115, सैंक्टर, 27-ए चण्डीगढ़

# आर्यसमाज सैक्टर-७ चण्डीगढ़ में प्राप्त सुविधाएं:—

**आर्यसमाज सैक्टर-7 चण्डीगढ़ एक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक संस्था है। जन-साधारण के लिए इसमें निम्नलिखित सुविधाएं प्राप्त हैं :--**

- आयुर्वेदिक औषधालय जो कि सुयोग्य वैद्य श्री पं. रामजी दास शर्मा वैद्यशास्त्री की देख-रेख में चल रहा है। इसमें रोगी की जांच मुफ्त की जाती है तथा निःशुल्क औषधि दी जाती है।
- इसमें श्रीमती कमला घई-स्मृति-पुस्तकालय व वाचनालय कार्य कर रहा है जिसमें वैदिक साहित्य के साथ बच्चों के लिए उत्तम साहित्य उपलब्ध हैं। वाचनालय में समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं पढ़ने के लिये भी उपलब्ध हैं।
- हवन के लिए उत्तम हवन सामग्री, समिधा तथा हवन कुण्ड आदि उचित मूल्य पर मिलते हैं।
- वैदिक साहित्य, पीतल के तथा अन्य धातुओं के बने ओ३म्, ओ३म् ध्वज तथा Stickers लागत मूल्य पर मिलते हैं।
- शादी-विवाह तथा अन्य अवसरों पर प्रयोग के लिए बर्तन व बिस्तर मामूली राशि देने पर मिलते हैं। ऐसे अवसरों पर मेहमानों को आर्यसमाज के अतिथिगृह में भी ठहराया जा सकता है।
- सभी प्रकार के संस्कार उत्तम वैदिक रीति से सम्पन्न कराने के लिए सुयोग्य पुरोहित श्री पं. उमेश कुमार शास्त्री एम० ए० द्वय सेवा में तत्पर रहते हैं। आर्यसमाज की यज्ञशाला में विवाह आदि संस्कार सम्पन्न कराए जा सकते हैं।
- आर्यसमाज के अतिथि-गृहों में विद्वानों तथा प्रचारकों के ठहरने की निःशुल्क व्यवस्था है। अन्य नागरिक भी मामूली राशि प्रतिदिन देकर इस व्यवस्था का लाभ उठा सकते हैं।
- पारिवारिक सत्संग तथा कथा आदि की विशेष व्यवस्था है।
- वैदिक साधना-धाम निर्माणाधीन है जिसमें नियमानुसार वयो-वृद्धों के रहने की आदर्श व्यवस्था होगी।
- हाल तथा तहखाना (Basement) जो निर्माणाधीन है, आम जनता की सुविधा के लिए उपलब्ध होंगे।

# मरुआ

रामजी दास शर्मा, P.S.S. (Retd.)
वैद्य शास्त्री, आजीवन सदस्य,
आयुर्वेद महामंडल, नई देहली
इंञ्चार्ज—स्वामी दयानन्द बख्शी टेक चंद
आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय,
आर्यसमाज, सैक्टर-7, चण्डीगढ़।

मरुआ एक प्रसिद्ध सुगंधित पौधा है। यह तुलसी जाति से है। इसके पत्ते हरे तथा कुछ काले-जामनी (बैंगनी) रंग के होते हैं। इसका पौधा बहुत शाखाओं वाला झाड़ीदार 2'-3' फुट तक ऊंचा होता है। प्राय: यह पांडू रंग या पीली मिट्टी में पैदा होता है। इसके पत्ते गोल अंडाकार तथा कुछ लम्बे होते हैं। फूल तुलसी की मँजरी की भांति गुच्छों में बड़े आकार के बैंगनी रंग के शरद ऋतु में होते हैं। बीज काले गोल तथा छोटे होते हैं। सफेद जाति का मरुआ औषधियों के प्रयोग में लाया जाता है। लोग इसकी पुदीने की भांति चटनी बनाकर भी प्रयोग करते हैं जो कि खाने में बड़ी स्वादिष्ट और गुणकारी है।

मरुआ रस में कटु तथा पाक, रुचिकारक, तिक्त रस-युक्त, रूक्ष, सुगंधवाला, हृदय का हितकारी, अग्नि-वर्धक, तीक्ष्ण, उष्ण, पित्तकारक, लघु है। बिच्छू, भिड़, ततैयादि के विष में उपयोगी मानते हैं। वात, कफ कृमि तथा कुष्ठ के लिये काफी गुणकारी मानते हैं। तीक्ष्ण और उष्ण होने के कारण वात तथा कफ नाशक और पित्त कारक होने के कारण शोक, श्वास शमन करने वाला तथा वेदना-नाशक है। दुर्गंध-नाशक और व्रण-रोपण-क्रिया में किसी हद तक उपयोगी सिद्ध हुआ है। कई एक चिकित्सकों ने तो इसे कफघ्न, श्वास कासहर, हृदयात्तेजक, कुष्ठघ्न, आर्त्तव-जननादि में भी हितकारी माना है। चर्म रोगों में बड़ा लाभकारी है। प्राय: औषध-प्रयोग के लिये इस का पञ्चांग ही प्रयोग में लाया जाता है। दर्द, शोथादि में इसका लेप तथा इसके तैल की मालिश की जाती है। इसके पञ्चांग को पानी में उबाल कर धोना या स्नान करना उपयोगी माना गया है।

सामान्य आयुर्वेदिक चर्चा —

# राई या राजिका

रामजी दास शर्मा, P.S.S. (Retd.)
वैद्य शास्त्री, आजीवन सदस्य,
आयुर्वेद महामण्डल, नई देहली
इन्चार्ज — स्वामी दयानन्द बक्शी टेक चंद
धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय,
आर्य समाज सैक्टर-7, चंडीगढ़।

राई एक लोक प्रसिद्ध वस्तु है। इसे किसी न किसी प्रकार से खाने के प्रयोग में लाया जाता है। इस को भिन्न-भिन्न भाषाओं, देशों तथा स्थानों पर अलग-अलग नामों से सम्बोधन करते हैं।

यह दो प्रकार की लाल तथा कुछ काले रंग की होती है। काली राई को संस्कृत म क्षण, क्षुताभिजनक, कृमिका, कृष्ण सर्षप कहते हैं। हिन्दी भाषा में काली राई, राज सरसों, बंगला में काल सर्ष, राई सरिषा, कज्जला, कृष्ण राई, पंजाबी में राई (काली राई), मराठी में काली तिखी, मारवाड़ी में राई त्रेट, तैलगु में आवलो कहते हैं। दोनों प्रकार की राई की पैदावार (उपज) सरसों की तरह खेतों में सारे भारत वर्ष में होता है। इस का पौधा 2′—3′ फुट से लेकर 5′—6′ फुट तक झाड़दार और पीले फूल का होता है। पत्ते 4″ ईंच से लेकर 8″—9″ ईंच तक लम्बे होते हैं जिसके किनारे कुछ कटे से होते हैं। इसका रंग और आकार सरसों जैसा होता है पर भिन्नता केवल इतनी है कि इस के दाने सरसों से भी बारीक यानि छोटे होते हैं। इस की फलियाँ भी सरसों जैसी होती हैं पर आकार में उस की फलियों से बारीक होती हैं। इसकी बुआई भी सरसों की तरह शरद ऋतु में की जाती है और ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में इस की फसल पक जाने पर कटाई होती है। दोनों प्रकार की राई गुण-धर्म में कफ तथा पित्त नाशक है। कंडू तथा रक्त दूषित करती है और कीटाणु (कृमि) नाशक है।

कालो तथा कुछ लाल रंग की राई के दानों को पीस कर औषधियों और खाने के प्रयोग में लाया जाता है। इसके पीसने से किसी प्रकार की गंधादि नहीं आती। परन्तु यदि इस में पानी मिला दिया जाये तो यह अपनी सुगंध छोड़ती है। यदि इसे तुरन्त भिगो कर सूंघा जाये या आंख के पास किया जाये तो खारिश पैदा करती है। लोग इस का प्रयोग आचार विशेष कर कच्चे आचारों में जोकि तुरन्त ही खाने के प्रयोग में किया जाता है; करते हैं। मगर लोग पक्के यानि देर तक रखने वाले आचारों में भी इस को तैल आदि में तल कर करते हैं। इस का प्रयोग प्रायः कांजी में तो आम लोक प्रसिद्ध है। इसके बगैर कांजी का आनन्द नहीं आता। कुछ एक प्रान्तों में तो इसका प्रयोग प्याज की भांति तल या भून कर दाल-सब्जी में छौंक लगाकर करते हैं। इसका धर्म-गुण अग्नि प्रदीप्त करना और भूख बढ़ाना है। गर्म-रूक्ष होने के कारण कुछ एक वैद्य लोग इसका प्रयोग संधिपात रोगों में करवाते हैं। कहीं कहीं (वैद्य) चिकित्सकों को मरहम आदि में भी इसका प्रयोग करते देखा गया है पर इसके लिए विशेष योग्यता तथा अनुभव का होना परम आवश्यक है।

# महर्षि दयानन्द-बख्शी टेकचन्द-धर्मार्थ अयुर्वेदिक औषधालय

आर्य समाज सैक्टर-7, चण्डीगढ़

धर्म बचे, धन बचे, सहज ही रोग नसाय ।
साथ ही सेवा देश की, जो देशी औषध खाय ।।

आर्य समाज सैक्टर-7 की प्रबन्धक-सभा ने जनता की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए कई वर्षों से आयुर्वेदिक औषधालय की स्थापना की हुई है। यह औषधालय कई दानियों की सहायता से रोगियों को सुचारु रूप से निःशुल्क चिकित्सा की सुविधा देता आ रहा है। आर्य-समाज ने यहां एक सुयोग्य और अनुभवी आयुर्वेदिक चिकित्सक श्री रामजी दास शर्मा वैद्याचार्य की नियुक्ति की है जिससे मार्च 1982 में निशुल्क सेवाएं प्राप्त हुई हैं। वैद्य जी पटियाला के एक ऐसे परिवार से सम्बन्ध रखते हैं जो कि दस-बारह पीढ़ियों से आयुर्वेदिक चिकित्सा-पद्धति द्वारा मानवता की सेवा करता आ रहा है। आप एक कुशल, सिद्ध-हस्त, अनुभवी आयुर्वेदिक विशेषज्ञ, हैं। आप ने पटियाला आयुर्वेदिक कालेज, आयुर्वेदिक हस्पताल, पटियाला-आयुर्वेदिक फार्मेसी और आयुर्वेदिक तथा यूनानी मैडिसन बोर्ड की स्थापना तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा-पद्धति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आप ने आयुर्वेद के प्रसार के लिए आयुर्वेदिक औषधालयों की स्थापना के लिए कई एक योजनाएं बनाईं जिसके फलस्वरूप कई आयुर्वेदिक औषधालय। खुले आपने पटियाला तथा चन्डीगढ़ की वैद्य-सभाओं का पुनर्गठन करके उनका जीर्णोद्धार किया। पैप्सू वैद्य-सभा का सारा गठन आपने अपनी अनथक कोशिश से किया।

आप 1940 ई० से अखिल भारतीय आयुर्वेदिक महामण्डल (All India Ayurvedic Congress) के आजीवन सदस्य हैं। पारिवारिक संस्कार होने के कारण आपको आयुर्वेद की सेवा की बड़ी लग्न है। आप सरकारी सेवा में होते हुए भी निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा की सुविधा जनता को प्रदान करते रहे। अब सरकारी सेवा से निवृत होने के पश्चात् आर्य समाज के औषधालय को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपनी सेवाएं निःशुल्क समर्पित की हुई है।

इस औषधालय की सेवा का लाभ चण्डीगढ़, मुहाली, पंचकुला, खरड़, ईर्द-गिर्द के इलाके की जनता ही नहीं उठा रही बल्कि बाहर के अन्य स्थानों के रोगी भी वहां चिकित्सा के लिए आते हैं। यह वैद्य जी की सद्भावना तथा प्रयत्न का द्योतक है।

इसके अतिरिक्त कुमारी रजनीश भल्ला जी "उप वैद्य" भी आपके साथ पूरी तत्परता से इस औषधालय में सेवारत हैं।

आर्य समाज की उन सब दानी महानुभावों का विशेष कर जस्टिस बक्शी टेक चन्द जी का जिन्होंने इस आयुर्वेदिक औषधालय की स्थापना के लिए अग्रसर हो कर दान दिया; आभारी है समाज आशा करती है कि सभी दानी सज्जन आगे भी इसी प्रकार अपना सहयोग देकर समाज तथा वैद्य जी का उत्साह बढ़ाते रहेंगे और स्वास्थ्य-प्राप्त-रोगियों की शुभ कामनाओं के भागीदार बनेंगे। इलाज ही नहीं बल्कि आर्य समाज तथा हिन्दू-संस्कृति के मुख्यध्येय वेद-प्रचार में सहयोग देकर पुण्य के भागीदार बनेंगे क्योंकि आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है और वेद-प्रचार करना आर्य समाज का मुख्य ध्येय है।

औषधालय का समय :

| सर्दियों में : | गर्मियों में : |
|---|---|
| प्रातः 8.30 से 10.30 बजे तक | प्रातः 8-00 से 10-00 बजे तक |
| सायं 4.30 से 6.00 बजे तक | सयं 5-30 से 7-00 बजे तक |

उप प्रधान          मंत्री          प्रधान

# सूक्तियां

1. यदि कोई महान् है तो उसके पीछे अन्धे बन कर मत चलो।
   —स्वामी विवेका नन्द
2. सेवा उसकी करो जिसको सेवा की जरुरत है। जिसे सेवा की जरुरत नहीं उसकी सेवा करना ढोंग है; दम्भ है।
   —महात्मा गांधी
3. अपनी पीड़ा तो पशु-पक्षी भी अनुभव करते हैं। मानव वह है जो दूसरों की पीड़ा को अनुभव करे।
4. कर्म करते रह कर ही हम कर्म से महान् हो सकते हैं, परित्याग या पलायन करके किसी प्रकार भी यह सम्भव नहीं।
   —रवीन्द्र नाथ ठाकुर
5. मोहवश प्रियजनों से भी अत्यधिक प्रम करने से यश चला जाता है।
   —महर्षि बाल्मीकि
6. लोग धर्म के लिए सोचेंगे, लड़ेंगे और मरेंगे भी, लेकिन उसके लिए जीयेंगे नहीं।
   —कोल्टन

# स्वर्गीय लाला कुन्दन लाल कपूर के प्रति साकार श्रद्धांजलि

लाला कुन्दन लाल कपूर
(१३-४-१९००—२०-२-१९६८)

लाला कुन्दन लाल कपूर का जन्म एक सम्भ्रान्त परिवार में वैशाखी के शुभ दिन १३ अप्रैल १९०० को जामके, जिला स्यालकोट (अब पाकिस्तान) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री आत्मा राम जी कपूर था और वे साहूकारा तथा सर्राफे का काम करते थे। श्री कुन्दनलाल ने प्रारम्भिक शिक्षा जामके में ली। बी०एस०सी० की डिग्री इन्होंने जम्मू के प्रिंस ऑफ वेल्स कालेज से तथा बी०टी० सैन्ट्रल ट्रेनिंग कालेज लाहौर से की। इन्होंने शिक्षा-क्षेत्र को ही अपने जीवन का ध्येय चुना। इन्होंने के० आर० आर्य हाई स्कूल भेरा, सनातन धर्म हाई स्कूल लाहौर, डी० बी० हाई स्कूल बटाला तथा डी० बी० हाई स्कूल समराला में विज्ञान के शिक्षक, सैकिंड हैडमास्टर तथा हैडमास्टर के तौर पर बड़ी सफलतापूर्वक निष्ठा और ईमानदारी से कार्य कर प्रसिद्धि प्राप्त की। रिटायर होने के बाद चण्डीगढ़ में बसे तथा डी० ए० वी० हायर सैकंडरी स्कूल और मोतीराम आर्य स्कूल में निःशुल्क सेवा की। चाहे नौकरी इन्होंने सनातन धर्म/डी० बी० स्कूलों में की परन्तु विचारधारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर स्थिर थीं। वे कई बार बटाला आर्यसमाज के प्रधान बनाए गए। वे प्रतिदिन यज्ञ करते थे। २०-२-६८ को वे स्वर्गवासी हुए।

इनकी धर्मपत्नी श्रीमती कर्तार देवी कपूर ने उनकी स्मृति में हाल बनाने के लिए ५१,००० (इक्यावन हजार) रुपए का दान दिया है। श्री कुन्दन लाल जी ने अपने जीवन काल में यह राशि Gold Bonds के रूप में राष्ट्र सेवा में लगाई थी, वही राशि अब समाज सेवा के लिए दी गई है। आर्य समाज स्वर्गीय लाला कुन्दन लाल के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है। साथ ही श्रीमती करतार देवी कपूर उनके सुपुत्र श्री विनोद कपूर और बहू श्रीमती उषा कपूर के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता है।

# श्रीमती प्रसन्नी देवी के प्रति
# साकार श्रद्धांजलि

श्रीमती प्रसन्नी देवी—१९१२-१९७९

श्रीमती प्रसन्नी देवी का जन्म सन् 1912 ई० में हुआ। इनके पिता श्री सिंधूरिया मल पटियाला में अनाज मण्डी के प्रसिद्ध आढ़ती थे। इनका विवाह सन् 1928 में श्री जौहरी लाल सुपुत्र डा० बाबू लाल के साथ हुआ। वे बड़ी सहृदय और दयालु प्रकृति की धर्मपारायण महिला थीं। उनका निधन 16 अप्रैल सन् 1979 में हुआ। उनकी पुण्य स्मृति को सदा सजीव रखने के लिए उनके पति श्री जौहरी लाल मकान नं० 215, सैक्टर 7 ने इस आर्यसमाज में निर्माणाधीन "वैदिक साधना-धाम" के लिए 10,000 (दस हज़ार) रुपए का दान दिया है। इनकी स्मृति में सैक्टर 7 व 8 के डी०ए०वी० स्कूलों में पीने के पानी की टंकियों का भी निर्माण कराया गया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि श्रीमती प्रसन्नी देवी की आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करें। श्री जौहरी लाल के प्रति आर्यसमाज हार्दिक आभार प्रकट करता है।

# Arya Samaj is grateful to him

Dr. Ram Partap

Born on 1 January 1906 at Amloh District Patiala Punjab.

School Eduction :—State High School Nabha up to Matric. Passed Matric in 1922.

Higher Education :-(1) Passed F. Sc Examination (Medical Group) of Punjab University from D.A,V. Collage Lahore in 1924

II) Passed M.B.B.S Examination of Punjab University from King Edward Medical College Lahore in first attempt in 1929

Dr. Ram Partap did house job in Eye, Ear, Nose & throat from 18-6-1930 to 15-6-1931. He was appointed House Surgeon in Civil hospital Nabha and also medical officer Jail & Police from 1.3.1932. He was sent for B.D.S. to De Montmornly College of Dentistry Lahore in October 1935 and did B.D.s. in October 1937. He came back to Nabha and was appointed Dental and E.N.T. Specialist in Civil Hospital Nabha till

June 1941, when he offered his services in the 2nd world war. Then he joined I.M.S. (Dental Branch) and continued till July 1947. He got released from the Army and under the post-resettlement scheme was sent to U.S.A. for D.D.S, in 1948.

Having done D.D.S. in June 1950, he came back to PEPSU Government and was appointed Head of Dental Department Rajindra Hospital Patiala. He was the first principal of Govt. Dental College Patiala. He retired at the end of 1960 and settled in Chandigarh in his own house no. 232 sector 16A where he is living now.

He has donated Rs. 20000/- (Twenty thousand) to Arya Samaj Sector-7 for the constuction of Vedic Sadhna Dharm. He has promised to donate Rs. 10000 (Ten Thousand) more to make the total donetion at Rs. 30000 (Thirty thousand) towards the cost of one set. Arya Samaj is grateful to him for this benevolent gesture.

## सूक्तियां

1. नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तनाशनम् ।।

हे ईश्वर ! मैं राज्य नहीं चाहता, स्वर्ग नहीं चाहता, मोक्ष नहीं चाहता । मैं तो दुःख से संतप्त प्राणियों के क्लेश का नाश चाहता हूँ ।

2. हे तात ! तुमसे एक अत्युत्तम बात कहता हूँ कि काम से, लोभ से, या भय से और जीवन के लिए कभी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए । जो लोक तथा परलोक दोनों में हितकर हो वही धर्म है ।

—विदुर नीति

# आर्यसमाज इनका धन्यवाद करता है

श्रीमती सुमित्रा गण्डोक

श्रीमती सुमित्रा गण्डोक आर्यसमाज सैक्टर-7 की एक प्रतिष्ठित महिला हैं। आर्यसमाज के प्रति निष्ठा और स्नेह प्रारम्भ से ही इनमें कूट-कूट कर भरा है। प्रति दिन प्रातः नियमित रूप से समाज में यज्ञ पर उपस्थित रहना इनका जीवन-क्रम है। समाज के प्रत्येक कार्य में सक्रिय भाग लेने के साथ-साथ स्थानीय Red Cross तथा P.G.I. की सराय में सेवा-कार्य भी बड़ी रुचि और लग्न से करती हैं। इन्होंने अपने पति स्वर्गीय श्री विशम्भर नाथ गण्डोक की स्मृति में आर्यसमाज सैक्टर-7 में निर्माणाधीन "वैदिक साधना-धाम" के लिए 10,000 रु० (दस हजार रु.) दान दिए हैं। इनका हार्दिक धन्यवाद है।

# आर्यसमाज इनका आभारी है ।

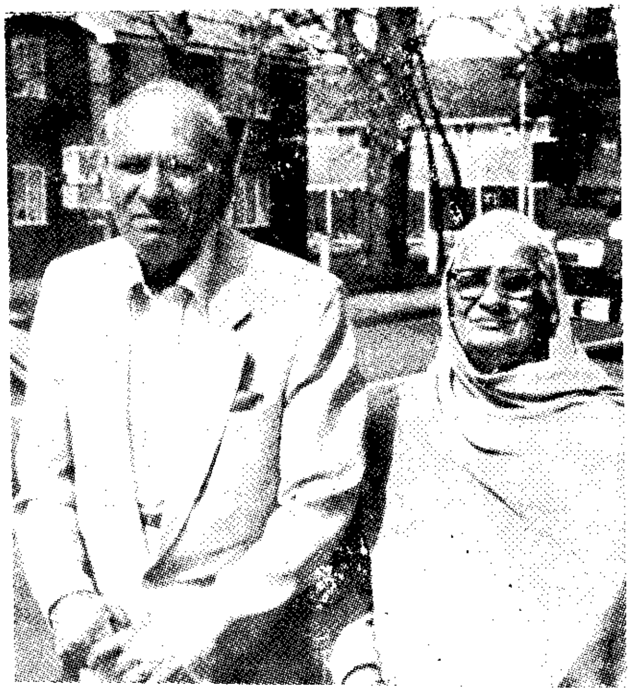

श्री सन्त राम ऐरी व श्रीमती विद्यावती ऐरी

सम्भ्रान्त लखनपाल परिवार में उत्पन्न हुई श्रीमती विद्यावती ऐरी (वर्तमान उम्र 75 वर्ष) का विवाह श्री सन्तराम ऐरी से हुआ। इनके आठ बच्चे हुए जिनमें से छः (तीन पुत्र व तीन पुत्रियां) जीवित हैं। दो पुत्र व दो पुत्रियां इंग्लैंड में बसे हुए हैं और एक पुत्र अरबदेश में भारतीय दूतावास में प्राईवेट सेक्रेटरी के पद पर हैं। एक पुत्री भारत में है। श्रीमती व श्री ऐरी स्वयं भी इंग्लैंड की नागरिकता प्राप्त कर, 189- सैंडन रोड, स्टैफर्ड इंग्लैंड में संभ्रान्त एवं शान्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं।। धार्मिक पृष्ठभूमि इस परिवार को विरासत में मिली है जिसके कारण आर्यसमाज के प्रति सभी परिवार सदस्यों का लगाव है। दान देने के लिए साधन के साथ-साथ देने की प्रवृति भी है। श्री रामनाथ कपूर की प्रेरणा भर से उन्होंने इस समाज को भवन-निर्माण के लिए 5000 रु. का दान सितम्बर 1987 में दिया है। फरवरी 1988 तक 50 पौंड (लगभग 1000 रु.) और देने का बचन भी दिया है। उनकी दो पुत्रियां भी 25-25 पौंड शीघ्र देगी। आर्यसमाज सैक्टर-7 इस दान के लिए धन्यवाद करते हुए ऐरी परिवार के सुखी व दीर्घ जोवन की कामना करता है।

# वार्षिक विवरण 1986-87
# आर्यसमाज सैक्टर-7, चण्डीगढ़

सन् 1958 में इस समाज की स्थापना स्वर्गीय पं० नानक चन्द द्वारा की गई। क्रमशः विकास के पश्चात् अब यह एक पूर्ण विकसित समाज है और चण्डीगढ़ के प्रगतिशील समाजों में अग्रगण्य है। अपने 29वें वर्ष में भी इस समाज ने सभी दिशाओं में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है जिसका विवरण इस प्रकार है :—

## (क) वेदप्रचार—

सदा की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार के लिए निम्नलिखित माध्यम अपनाए गए :—

1. दैनिक यज्ञ में वेद-मंत्रों की व्याख्या तथा सत्संगों की व्यवस्था।
2. आर्यपरिवारों में हवन-यज्ञ तथा वैदिक रीति से संस्कारों का सम्पन्न कराना।
3. पारिवारिक सत्संगों की व्यवस्था करना।
4. वैदिक साहित्य को पुस्तकालय में स्वाध्याय के लिए मंगाना तथा जो चाहे उसे उचित मूल्य पर देना या मुफ्त बांटना।
5. समय-समय पर वेद-कथाओं की व्यवस्था करना तथा साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन।
6. वैदिक रीति से विभिन्न पर्व मनाना।
7. अन्य आर्यसमाजों व वैदिक संगठनों का सहयोग करना।
8. समाज के सभी वर्गों विशेष तौर पर बच्चों तथा किशोरों में वैदिक विचारधारा तथा भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि जागृत करना।

वर्ष 1986-87 में वेद प्रचार पर 7290-00 रु० व्यय किये गए। इसमें से 3422.00 रु. श्री दुर्गादास वेद-प्रचार फंड से तथा 3868-00 रु० वेदकथाओं, सत्संगों तथा अन्य संस्थाओं के सहयोग पर व्यय किए गए। 3500 रु० वैदिक साहित्य छपवा कर मुफ्त बांटने के लिए व्यय किए गए। लगभग 4000 रु० अन्य आर्य समाजों, वैदिक संगठनों तथा संस्थाओं के सहयोग के रूप में व्यय किया गया। भूत पूर्व पुरोहित पं० सत्य व्रत शास्त्री जी को 250 रु० मासिक आर्थिक सहायता के रूप में दिया गया। शरणार्थी फंड केलिए भी प्रादेशिक सभा दिल्ली को 601 रु० सहायता भेजी गई

## (ख) औषधालय

महर्षि दयानन्द बख्शी टेक चन्द धर्मार्थ औषधालय की स्थापना सन् 1977 में की गई। इसमें रोगियों की मुफ्त चिकित्सा की व्यवस्था है। सरकारी सेवा से निवृत्त सुप्रसिद्ध तथा अनुभवी आयुर्वेदिक चिकित्सक श्री रामजीदास शर्मा वैद्य शास्त्री की देख-रेख में औषधालय बहुत लोकप्रिय हुआ है।

सन् 1986-87 में 6870.00 रु० औषधालय पर व्यय किये गए। पर्ची फीस, चन्दा, दान, आदि से इस वर्ष 12120-00 रु० प्राप्त हुए। औषधालय का कुल व्यय 14120-00 रु० हुआ।

सन 1986-87 में 18265 रोगियों ने औषधालय से लाभ उठाया।

## (ग) पुस्तकालय

20 फरवरी, 1986 से पुस्तकालय का कायाकल्प किया गया। इसी दिन से आर्यसमाज के पुस्तकालय को श्रीमती कमला घई-ट्रस्ट को सौंप दिया गया जिसकी स्थापना श्री ओम् प्रकाश जी घई की स्वर्गीय पत्नी श्रीमती कमला घई की स्मृति में की गई। अब इस पुस्तकालय का नाम श्रीमती कमलाघई स्मृति-पुस्तकालय एवं वाचनालय है।

इस पुस्तकालय के सारे फर्नीचर को नए सिरे से बनवाया गया है। पंखे, कूलर, बिजली की फिटिंग सभी नए लगवाए गए हैं। कुमारी अनीता पुस्तकालयाध्यक्ष के तौर पर अपना कार्य बड़ी कुशलता से करती है।

इस समय पुस्तकालय कोष में 70,000.00 रु० फिक्स्ड डिपाज़िट में हैं। इस पर प्राप्त होने वाले ब्याज से पुस्तकालय का व्यय चलता है। इस पुस्तकालय का विस्तृत विवरण इस स्मारिका में अलग दिया गया है।

## (घ) श्री एल० आर० ग्रोवर दयानन्द एजूकेशनल स्कालरशिप ट्रस्ट

ट्रस्ट की स्थापना सन् 1983 में श्रीमती शान्ता ग्रोवर ने अपने स्वर्गीय पति श्री एल० आर० ग्रोवर की स्मृति में की। इस समय ट्रस्ट के फिक्स्ड डिपोजिट फंड में 27000.00 रु० की राशि है तथा सेविंग फंड एकाऊंट में 2845 रु० हैं। इसके ब्याज से प्रति वर्ष एक छात्रवृत्ति इंजीनियरिंग के विद्यार्थी तथा एक छात्रवृत्ति निर्धन विधवा या परित्यक्ता स्त्री जो आत्मनिर्भरता के लिए पढ़ना चाहती हो, को देने की व्यवस्था है। चण्डीगढ़ इंजीनियरिंग कालेज के एक छात्र को 1000 रु० इस वर्ष छात्रवृत्ति दी गई।

## (ङ) आर्यसमाज की अतिरिक्त भूमि व भवन निर्माण—

इस आर्यसमाज के विस्तार के लिए विशष तौर से हाल, वृद्ध-आश्रम (वैदिक साधना-धाम) तथा औषधालय भवन-निर्माण के लिए 3 .4 कनाल अतिरिक्त भूमि चण्डीगढ़ प्रशासन से 1984 में 1,37,000 रु०

लागत पर खरीदी गई। 30-9-86 तक यह कीमत चुका दी गई। चण्डीगढ़ प्रशासन से भवन का नक्शा पास करा कर इस वर्ष निर्माण-कार्य प्रारम्भ किया गया। निर्माण-कार्य अब पूरी प्रगति पर है। हाल के नीचे का तहखाना (Basement) तथा वैदिक साधना-धाम की एक मंजिल की छत डाली जा चुकी है। अब तक भवन-निर्माण पर 455286.00 रु० व्यय हो चुका है। अब हाल के निर्माण के लिए श्रीमती करतार देवी कपूर ने 51,000 (इक्यावन हजार) रु० की राशि दान दी है। हाल का नाम उनके स्वर्गीय पति लाला कुन्दन लाल कपूर की स्मृति में रखा जाएगा।

1986-87 में भवन-निर्माण के लिए 1,83,058.00 रु० का दान प्राप्त हुआ जिसका विवरण महत्त्वपूर्ण प्राप्तियों में किया गया है। सभी दानियों का बहुत धन्यवाद प्रकट किया जाता है और भविष्य में भी उनसे व अन्य दानियों से सहयोग की आशा की जाती है।

## (च) श्री गोविन्दराम गक्खड़-भाषण प्रतियोगिता व श्री अरूढ़ चन्द घई-भक्त अमींचन्द संगीत-प्रतियोगिता

आर्यसमाज की गतिविधियों में बच्चों तथा युवा वर्ग की दिलचस्पी बढ़ाने के उद्देश्य से, भाषण एवं संगीत-प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर तथा दिल्ली के स्कूल एवं कालेजों के छात्र-छात्राएं बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। इन पर होने वाले व्यय तथा पुरस्कारों की व्यवस्था श्री बी०बी० गक्खड़ क्षेत्रीय प्रबन्धक, डी०ए०बी० शिक्षा-संस्थाएं तथा श्री ओम् प्रकाश घई करते हैं।

14-12-86 को उपरोक्त प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। डी०ए०बी० सीनियर सैकंडरी स्कूल, चण्डीगढ़ के विद्यार्थियों ने 10-15 वर्ष आयु-वर्ग में भाषण-प्रतियोगिता का चलविजयोपहार जीता। व्यक्तिगत प्रथम पुरस्कार श्री पंकज डी०ए०वी मॉडल स्कूल चण्डीगढ़, द्वितीय-कुमारी शिवानी, डी०ए०वी० मॉडल स्कूल पंचकूला व तृतीय-श्री अनुराग, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल चण्डीगढ़ ने प्राप्त किए। सान्त्वना-पुरस्कार श्री सम्राट डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल चण्डीगढ़ तथा कुमारी रितु शर्मा, डी.ए.वी मॉडल स्कूल, चण्डीगढ़ ने प्राप्त किए।

संगीत-प्रतियोगिता में डी. ए. वी. माडल स्कूल, चण्डीगढ़ ने आयु वर्ग 10-15 का चलविजयोपहार जीता। व्यक्तिगत पुरस्कार डी. ए. बी. सीनियर सैकंड्री स्कूल, चण्डीगढ़ के श्री बलकार सिंह ने प्रथम तथा इसी स्कूल के परविंदर ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। किशोर-वर्ग में (आयु 15-20 वर्ष) केवल एक कुमारी अंजलि, देव समाज कालेज चण्डीगढ़ ने भाग लिया और सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

## (छ) आर्यसमाज में बिस्तरों तथा बर्तनों की व्यवस्था

स्त्री समाज के सहयोग से इस आर्य समाज में 32 सर्दी-गर्मी के बिस्तर तथा तीन सैट बर्तनों के,

रखे गए हैं। ये जन-साधारण को आवश्यकतानुसार प्रयोग के लिए मामूली किराया ले कर दिए जाते हैं। यह व्यवस्था अत्यन्त लोकप्रिय हुई है। भविष्य में इस सुविधा को और बढ़ाने का प्रयत्न किया जाएगा।

## (ज) विशेष धन्यवाद

इस वर्ष की स्मारिका आपके हाथों में है। इसके लिए जिन विद्वानों ने लेख लिखे हैं उन सभी का हार्दिक धन्यवाद है। जिन संस्थाओं तथा व्यापारियों ने इसमें प्रकाशन के लिए विज्ञापन देकर सहयोग दिया है उनका भी हार्दिक धन्यवाद किया जाता है। स्मारिका की छपाई में श्री पं० उमेश कुमार शास्त्री, पुरोहित जी का विशेष सहयोग प्राप्त होता है जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। समय-समय पर साप्ताहिक सत्संगों में प्रवचन देने वाले सभी विद्वानों का तथा यज्ञों में भाग लेने वाले यजमान-परिवारों का भी हार्दिक धन्यवाद।

गत वर्ष श्री यशपाल घई ने 14400 रु० की राशि वार्षिक उत्सव पर एकत्रित की जो कि इस समाज के दान एकत्रित करने वालों में सबसे अधिक है। समाज के अन्य सदस्यों ने भी दान एकत्रित करने में प्रशंसनीय कार्य किया है। दान एकत्रित करने वालों की सूची इसी स्मारिका में अन्यत्र दी गई है। सभी दान एकत्रित करने वाले प्रशंसा के पात्र हैं। सभी दानी महानुभावों के नाम जहां तक सम्भव है, दान-सूची में देने का प्रयत्न किया गया है। जिनके नाम नहीं भी दिए जा सके उनका भी आभार प्रकट किया जाता है।

स्त्री समाज के सहयोग के बिना तो इस समाज की सफलता की कल्पना ही नहीं की जा सकती। स्त्री समाज ने 12000 रु० फिक्स्ड डिपाजिट में रक्खा हुआ है और प्रति मास इसका व्याज औषधालय के लिए 100 रु० दिया जाता है और साथ ही औषधालय को 150 रु० प्रति मास डी.ए.वी. सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, सैक्टर-8 सी से प्राप्त होता है। वेदकथाओं तथा अन्य आर्थिक मामलों में भी स्त्रीसमाज का सहयोग स्वतः प्राप्त होता है। इस वर्ष भवन-निर्माण के लिए स्त्रीसमाज ने 124500.00 रु० का सहयोग दिया जो वास्तव में प्रशंसनीय है। वेद-कथाओं में तथा उत्सवों पर अतिथियों के लिए भोजन-व्यवस्था, ऋषि-लंगर का प्रबन्ध, प्रसाद का प्रबन्ध स्त्री समाज का ही सराहनीय कार्य है। वेद-कथाओं तथा साप्ताहिक-सत्संगों में भजनों की व्यवस्था भी स्त्रीसमाज द्वारा की जाती है तथा राष्ट्रीय पर्व जैसे स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस भी स्त्री-समाज के तत्त्वावधान में समारोह से मनाए जाते हैं। वर्तनों व बिस्तरों की जनसाधारण को सुविधा भी स्त्री-समाज द्वारा ही प्रदान की जाती है जिसमें श्रीमती उषा गुप्ता की प्रशंसनीय देख-रेख प्राप्त है। इस अमूल्य सहयोग के लिए स्त्री-समाज की प्रधान श्रीमती सत्या सचदेव व मन्त्री स्त्री-समाज श्रीमती प्रकाशवती आनन्द हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री रामनाथ कपूर प्रति सप्ताह साप्ताहिक सत्संगों में होने वाले प्रवचनों तथा समय-समय पर होने वाली वेद-कथाओं तथा मासिक बाल-सभाओं की सूचना टाईप करके स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजने की व्यवस्था करते हैं। इसके लिए वे प्रशंसा व धन्यवाद के पात्र हैं।

## (झ) आय और व्यय का लेखा

सन् 1986-87 में कुल ग्राय 30807 00 रु० तथा व्यय 402841.00 रु० हुग्रा। भवन-निर्माण के व्यय के कारण कुल व्यय में बहुत वृद्धि हुई है। जो फिक्स्ड डिपाजिट रसीदें समाज की ग्राय का साधन थीं क्योंकि उन्हीं पर प्राप्त होने वाले समाज का व्यय चलता था, उन पर बड़ी मात्रा में ऋण लेना पड़ा है ग्रौर इस प्रकार ग्राय घट गई है। इस ग्रोर सभी सदस्यों तथा जनसाधारण का ध्यान ग्राकर्षित कर के यह ग्रपेक्षा की जाती है कि वे समाज जो उनकी ग्रपनी समाज है, को कठिनाई के समय ग्रपना सहयोग देंगे।

**अविनाश चन्द्र**
मंत्री

**रिसाल सिंह**
प्रधान

# सूक्तियां

ऊर्ध्व बाहु विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किं न सेव्यते॥
श्रूयतां धर्म सर्वस्व श्रुत्वा चैवाव धार्यताम्।
ग्रात्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

—महर्षि व्यास

ग्रर्थ—ग्ररे लोगों! मैं भुजा उठाकर यह उच्च स्वर से कह रहा हूँ परन्तु कोई मेरी सुनता ही नहीं है। मनुष्य के जो चार पुरुषार्थ हैं—**धर्म**, ग्रर्थ, काम ग्रौर मोक्ष—इनमें से सांसारिक जीवन के लिए ग्रत्यन्त ग्रावश्यक ग्रर्थ ग्रौर काम की सिद्धि भी धर्म के माध्यम से ही हो सकती है तो उस धर्म का सेवन क्यों न किया जाए।

धर्म का सार क्या है, यह भी जान लो ग्रौर उसको सुन कर ग्रपने मन में दृढ़ता से धारण करो। वह सार यह है—ग्रपनी ग्रपनी ग्रन्तरात्मा के विरुद्ध ग्रन्य व्यक्तियों के साथ ग्राचरण नहीं करना चाहिए।

2. साधना ग्रौर सत्कर्म की समाप्ति कभी नहीं होती। जीवन के ग्रन्तिम क्षणों तक साधना एवं सत्कर्म चलते रहते हैं। साध्य की प्राप्ति के पश्चात् भी सत्कर्मों की साधना चलती रहे इसीलिए भक्त प्रभु-प्राप्ति के पश्चात् भी साधना का प्रवाह चालू रखते ही हैं।

# श्रीमती कमला-घई मैमोरियल ट्रस्ट
# पुस्तकालय एवं वाचनालय
# विस्तृत विवरण-वर्ष 1986-87

1. इस पुस्तालय एवं वाचनालय का उद्घाटन 20-2-86 को किया गया।

2- प्रति मास 20 तारीख को बाल-सदस्यों की सभा का ग्रायोजन किया जाता है-जिसमें बच्चों को भजन, कविताएं वेद-मंत्र, कहानियां ग्रादि सुनाने का ग्रभ्यास ग्रादि कराया जाता है। इसमें मानसिक एवं शारीरिक उन्नति पर बल दिया जाता है तथा बच्चों के लिए जल-पान का प्रबन्ध किया जाता है।

3. 21-3-87 को पुस्तकालय की ग्रोर से एक निबन्ध-लेखन-प्रतियोगता का ग्रायोजन किया गया। भाग लेने वाले बच्चों को 'क' ग्रौर 'ख' वर्गों में रखा गया-- 'क' वर्ग में 3, 4, 5 कक्षा के वच्चे थे ग्रौर 'ख' वर्ग में 6, 7, 8 के बच्चे थे। विषय इस प्रकार थे :-

**'क' वर्ग,**

(1) स्वामी दयानन्द के जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ।

(2) ग्रार्यसमाज के दस नियम तथा गायत्री मन्त्र ग्रर्थ सहित लिखें।

**'ख' वर्ग**

(1) प्रेरणा के स्रोत महात्मा हंसराज।

(2) स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन का ग्रानन्द ले सकता है।

ग्रायोजन के लगभग तीन सप्ताह पहले विज्ञापन द्वारा स्थानीय शिक्षा-संस्थाग्रों को विषयों की सूचना भेज दी गई थी।

**'क' वर्ग** में मोतीराम ग्रार्य स्कूल के पांचवीं कक्षा के विद्यार्थी संदीप कुमार को प्रथम, तीसरी कक्षा के ग्रमित सिगंला को द्वितीय तथा पांचवी कक्षा के विकास को तृतीय पुरस्कार दिया गया, पांचवीं कक्षा की कुमारी लवली को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया।

**ख वर्ग** में मोतीराम ग्रार्य स्कूल की कुमारी स्नेह लता, कक्षा 7 को प्रथम, सेंट जॉन हाई स्कूल के श्री ग्रखिलसेठी, कक्षा 7 को द्वितीय तथा मोतीराम ग्रार्य स्कूल की कुमारी कुसुम, कक्षा 7 को द्वितीय पुरस्कार दिया गया। डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल के मधुकर कुलश्रेष्ठ को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार-वितरण श्रीमती करतार देवी कपूर के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुग्रा।

'क' ग्रौर 'ख' वर्ग के प्रथम ग्राने वाले बच्चों के लेख ग्रलग पृष्ठ-पर दिए गए हैं।

4. 20-3-87 को ही वैदिक मन्त्र उच्चारण-प्रतियोगता ग्रायोजित की गई।

**क वर्ग** में डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल के श्री सम्राट भट्टाचार्य, कक्षा 6, सेंट जान के स्कूल के अखिल सेठी, कक्षा 5, डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल के विकास आनन्द कक्षा 6 व मधुकर, कक्षा 6 को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सान्त्वना पुरस्कार दिए गए।

यह पुरस्कार-वितरण भी श्रीमती करतार देवी कपूर के कर कमलों-द्वारा सम्पन्न हुआ। इन्होंने इस अवसर पर पुस्तकालय को 1000 रु. दान दिया।

चौधरी रिसाल सिंह जो कि इस आर्यसमाज के प्रधान हैं, की ओर से भी विजेता बच्चों को नकद पुरस्कार दिए गए।

6. (क) पुस्तकालय वा वाचनालय की आर्थिक स्थिति 31-3-87 की इस प्रकार है :-

| **Funds & Liabilities** | | **Assets** | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. Trust Fund (initial Deposit) | 30,000.00 | 1. Fixed assets (Library Books excluding Books received as donation) | | |
| 2. Library Security Refundable | | | | |
| (i) Balance B. F.= 240 | | (i) Balance B. F. Rs. | 448.05 | |
| (ii) Add during the year =1290 | 1530.00 | (ii) Purchases during the year Rs. | 163135 | |
| | | 2. Investments. | | 2,079.40 |
| 3. Life membership fund | | (i) Fixed Deposit with bonds Rs | 50,000.00 | |
| (i) Balance B. F· = 22,855 | | (ii) Unit trust of India | 20,000.00 | |
| | | | | 70,000.00 |
| (ii) Add during the year 36,732 | 59,587.00 | Interest accrued on fixed deposit | | 1530.00 |
| | | **Currant Assets** | | |
| | | (i) Saving Bank A/c | 11849.10 | |
| | | (ii) Cash in hand | 119.17 | |
| | | (iii) Income tax deduction at source refundable | 280,00 | 12248.27 |
| | | (iv) Income & Expenditure A/c (loss) | | |
| | | Balance B.F. | 900.25 | |
| | | Add during the year | 4359.08 | 5259.33 |
| | 91,117.00 | | | 91,117.00 |

**(ख) अन्य विवरण इस प्रकार है**

| | | |
|---|---|---|
| I. | बाल-सदस्य | 64 |
| II. | वयस्क-सदस्य | 37 |
| III. | बाल-विभाग में पुस्तकें | 480 |
| IV. | वयस्क-विभाग में पुस्तकें | 2058 |
| V. | 1-4-86-से 31-3-87 तक बच्चों की उपस्थिति | 8806 |
| VI. | Do वयस्कों की उपस्थिति | 2888 |
| VII. | Do बच्चों को दी गई पुस्तकें | 2665 |
| VIII. | Do वयस्कों Do | 1496 |

**(ग) वाचनालय में बच्चों के लिए आने वाली पत्रिकायें**

I. नंदन (II) टिंकल (III) चन्दा मामा (IV) मधु मुस्कान (V) सुमन सौरभ VI. लोट-पोट (VII) चंपक (VIII) टारगेट

**(घ) वाचनालय में वयस्कों के लिए आने वाले समाचार पत्र व अन्य पत्रिकायें**

(1) पंजाब केसरी (2) टाईम्स आफ इंडिया (अंग्रेजी) (3) इलस्ट्रेटेड (अंग्रेजी) वीकली (4) ट्रिब्यून (अंग्रेजी) (5) गृह शोभा (6) कंपीटिशन मास्टर (7) फेमिना (अंग्रेजी) (8) इन्डिया टुडे (अंग्रेजी) (9) एम्पलायमेन्ट न्यूज़ (अंग्रेजी) (10) मनोरमा (हिन्दी) (11) सरिता (हिन्दी) (12) मुक्ता (हिन्दी) (13) माया (हिन्दी) (14) धर्म युग (हिन्दी) (15) आर्य जगत् (हिन्दी) (16) Aryan Haritage (17) आर्य गजट (Urdu) (18) सचित्र आयुर्वेद (19) Electronics for you (20) Invention Intelligence (21) आरोग्य (22) शुद्धि समाचार (23) सोवियत नारी (24) सोवियत संघ (25) कंपीटीशन सक्सेस

**(न) वर्ष 1986-87 में विशेष दान**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्रीमती करतार देवी कपूर | 1000 |
| 2. | श्री सुमीर बाहरी | ,, |
| 3. | श्री आदित्य स्याल | ,, |
| 4. | श्री गौतम स्याल | ,, |
| 5, | डा० वेद कुमारी घई | ,, |
| 6. | श्री ओ. पी. घई एण्ड कं० (ए. डी. 1971) | ,, |
| 7. | श्री ओ. पी. घई एण्ड (कन्सट्रक्शन) | ,, |
| 8, | कृष्णा एसोसियेट्स | ,, |
| 9. | आर०पी० कोहली | ,, |
| 10: | कुमारी संगीता बाहरी | ,, |

(7) पुस्तकालय वा वाचनालय का कार्य-भार कुमारी अनिता, लायब्रेरियन श्रीमती पार्वती, सेविका के सहयोग से बड़ी कुशलता से सम्भाल रही हैं। ट्रस्ट इन दोनों का आभारी है।

# प्रेरणा के स्त्रोत महात्मा हँसराज

स्नेह लता
सातवीं-सी
मोतीराम आर्य सीनियर मॉडल स्कूल

जब कभी अनीति और अत्याचार अपनी सीमा लांघ जाते हैं, अधर्म बढ़ जाता है, स्वार्थ का राग चहुं ओर प्रबल हो उठता है, समाज अंधविश्वासों से अवरुद्ध हो जाता है, तब कोई महान् विभूति जन्म लेकर संसार में क्रांति उत्पन्न करती है। ऐसी ही महान् विभूतियों में महात्मा हँसराज जी की गणना की जाती है। उन्होंने संसार में समाज-सुधारक के रूप में जो कार्य किए वे सराहनीय हैं।

महात्मा हँसराज जी का जन्म 19 अप्रैल, 1864 इ० में बिजवाड़ा गाँव में हुआ। आप के पिता का नाम चुन्नी लाल था। 12 वर्ष की आयु में आपके पिता का देहान्त हो गया। आपकी आर्थिक दशा अच्छी न थी फिर भी आपने प्रथम श्रेणि में मैट्रिक पास किया।

जब आप आठवीं कक्षा में पढ़ते थे तो आपका-आर्यसमाज की ओर झुकाव बढ़ गया। अध्ययन-काल में ही आपने आर्यसमाज का प्रचार आरम्भ कर दिया।

जब श्री हँसराज ने बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और प्रान्त भर में द्वितीय रहे तब आप चाहते तो डिप्टी कमिश्नर आदि कुछ भी बन सकते थे, परन्तु आप स्वतन्त्रता के प्रेमी थे। आपने आर्यसमाज का प्रचार किया। आप यह जानते थे कि आर्यसमाज एक कालेज खोलना चाहता है परन्तु धन के अभाव से ढीला पड़ रहा है तो आपने अपने भाई मुलक राज जी से कहा—मेरी यह इच्छा है कि मैं एक पैसा भी लिए बिना अपना जीवन आर्यसमाज के लिए अर्पित कर दूं। मुलकराज ने अपने 80 रु. मासिक वेतन में से 40 रु. हँसराज जी और आर्यसमाज को देना स्वीकार किया। इस प्रकार मुलकराज ने हँसराज की गृहस्थी के पालन-पोषण का और हँसराज ने आदरी प्रिंसिपल के रूप में डी. ए. वी कालेज का भार उठाया।

स्वामी दयानन्द जी की स्मृति में 1 जून, 1886 ई. में डी. ए. वी. स्कूल की स्थापना हुई। हँसराज जी ने शिक्षा के प्रचार के लिए अपने आपको उसके प्रति समर्पित कर दिया। शीघ्र ही

डी. ए. वी. कालेज की स्थापना होने पर आप आजीवन उसके अवैतनिक प्रिंसिपल रहे। हँसराज जी का यह त्याग अपूर्व था। इस अतुल्य त्याग ने उन्हें हँसराज से महात्मा हँसराज बना दिया।

महात्मा हँसराज त्याग, तपस्या और दृढ़ संकल्प की साक्षात् प्रतिमा थे। उनमें आलस्य का नामोनिशान भी न था। ये बचपन से ही कष्ट सहने के अभ्यासी थे। वे सच्चाई से प्रेम करते थे।

महात्मा हँसराज जी ने धर्म से प्रभावित होकर अकाल-पीड़ितों और भूचाल-पीड़ितों की सेवा की। उन्होंने देश की सेवा और दीन-दुःखियों की पीड़ा दूर करने का प्रण किया। वे एक सच्चे समाज सेवी थे। उन्होंने समाज-सेवक के रूप में उलेखनीय कार्य किए। आज उनका नाम संसार भर में बड़े आदर और सम्मान से लिया जाता है। वे प्रेरणा के स्रोत थे। वे देश-वासियों की सेवा के लिए ही पनपे थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन देश की भलाई के लिए अर्पित कर दिया। उन्होंने नवयुवकों में स्वदेश-प्रेम की भावना जागृत की और आर्यसमाज के माध्यम से देश-प्रेमी युवकों के दल तैयार किए। उन्होंने 52 वर्ष तक आर्यसमाज और उस के माध्यम से जो कार्य किए उनका वर्णन सहज नहीं। सरलता, सादगी और विनम्रता की तो वे मूर्ति ही थे

—o—

# सूक्तियां

4. देवानामभवः शिवः सखा।

तू देवताओं का कल्याणकारी मित्र बन।

5. पूर्वे पितरः पदज्ञाः।

हमारे पूर्वज ऋषि वेद के पदों के ज्ञाता थे।

6. उतिष्ठत प्रतरता सखायः।

हे मित्रों! उठो व इस भव-सागर को पार करो।

श्रीमती कमला घई स्मृति-पुस्तकालय द्वारा आयोजित निबन्ध-लेखन-प्रतियोगिता में पुरस्कृत रचना —

# महर्षि दयानन्द के जीवन की घटनाएं

संदीप कुमार
कक्षा-पाँचवीं
मोतीराम स्कूल चण्डीगढ़

भूमिका :- जब-जब पृथ्वी पर अत्याचार बढ़ जाता है, अधर्म बढ़ जाता है व स्वार्थ का राग चारों ओर प्रबल हो उठता है तब कोई न कोई महान पुरुष अवतार लेता है। ठीक इसी तरह महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ। जब देश राजनैतिके सामाजिक और धार्मिक आदि सभी दृष्टियों से अवनति की ओर जा रहा था। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने जो कार्य समाज-सुधारक के रूप में किया वह सराहनीय है।

जन्म :- गुजरात की पुण्य भूमि ने गांधी जैसे रत्न को जन्म दिया जिसने देश के स्वाधीनता-संग्राम में अपूर्व योगदान दिया। ऐसी ही पुनीत भूमि पर महर्षि दयानन्द का जन्म 1824 ई. में गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक स्थान पर हुआ। इनके पिता का नाम कर्सन जी था। वे तहसीलदार थे। वे शिव के अनन्य उपासक थे। पिता ने इनका बचपन का नाम मूलशंकर रखा। वे बचपन में अत्यन्त प्रभावशाली बालक थे। उन्होंने शीघ्र ही शास्त्रों और ग्रन्थों का अध्ययन बहुत ही अच्छी तरह कर लिया था। उनके जीवन की कुछ घटनाएं नीचे दी जाती है :-

घटना 1- जिस वातावरण में बालक का पालन-पोषण हुआ उसे देखकर ऐसा लगता था कि यह भी अन्य ब्राह्मणों की भांति सांसारिक जीवन में कदम रखेंगे। लेकिन एक घटना हुई जिसने इनके जीवन को मोड़ दिया। जब ये 18 वर्ष के थे तब इनके पिता ने इन्हें शिवरात्रि का व्रत रखने का आदेश दिया। बालक ने व्रत रखा और बड़ी श्रद्धा के साथ शिव के मन्दिर में मूर्ति के आगे रात भर जागते रहे। सब भक्त सो गये। कुछ देर बाद उन्होंने देखा कि शिव की मूर्ति पर कुछ चूहे दौड़-धूप कर रहे हैं और रखी हुई मिठाईयाँ बड़े मजे से खा रहे हैं। अगर कोई और बालक होता तो ध्यान न देता मगर बालक मूलशंकर पर इस घटना का अमिट प्रभाव पड़ा। उन्होंने सोचा, यह कैसा भगवान है जो अपनी रक्षा करने में असमर्थ है जो चूहों को नहीं हटा सकते, वे लोगों की रक्षा कैसे कर सकते हैं। उनका मूर्ति-पूजा से ध्यान उचाट हो गया। उन्होंने सच्चे शिव को खोजने को ठानी। इस घटना ने उनके जीवन को बदल दिया।

घटना 2 :- कुछ दिनों के बाद मूलशंकर के चाचा और बहिन की मृत्यु हो गई। घर में रोना-कलपना शुरू हो गया मगर बालक मूलशंकर नहीं रोए। इनके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मृत्यु क्या है और सब को क्या

इस जीवन में मरना है ? मृत्यु के रहस्य के लिए मूलशंकर ने सब कुछ ठुकरा कर जंगल की राह ली । इन्होंने असंख्य कष्टों को सहन किया । भयंकर जंगलों में जहां भी सच्चे गुरू के मिलने की आशा होती वहां पहुंच जाते । अन्त में ये मथुरा पहुंचे । वहां इनकी भेंट गुरू विरजानन्द से हुई । इनके चरणों में बैठकर दयानन्द ने शिक्षा प्राप्त की ।

घटना3-: एक बार स्वामी जी किसी सभा में उपदेश दे रहे थे कि किसी ने इन पर एक विषैला सांप फेंका । स्वामी जी ने उसकी पुंछ पकड़ कर उस विषधर को खत्म कर दिया । स्वामी दयानन्द बहुत निडर थे ।

घटना 4-: एक बार स्वामी जी मिरजापुर में एक पगडण्डी पर जा रहे थे । सामने से एक सांढ़ आता हुआ दिखाई दिया । उसकी गुसीली चाल देखकर सब लोग इधर-उधर भागने लगे । स्वामी जी वहीं पर खड़े रहे । सांढ़ उनकी ओर बढ़ा । उन्होंने जोर से हुंकार दिया । सांढ़ एक ओर गया । कुछ समय बाद लोगों ने उनसे पूछा यदि सांढ़ आपको मार देता तो ! उन्होंने उत्तर दिया यह हाथ और भुजाएं किस लिए हैं । इनसे उसे दूर धकेल देता ।

घटना 5-: एक बार स्वामी जी कुटिया में झाड़ फेर रहे थे । उन्होंने सारा कूड़ा इकट्ठा किया और उसे दरवाजे के पीछे इकटठा कर दिया । विरजानन्द अंधे थे । उनका पैर कूड़े पर आ अटका । उन्होंने दमानन्द को अपने पास बुलाकर उसे लातों-मुकों से पीटा । दयानन्द चुपचाप उनके पैरों को पकड़कर मार खाते रहे । जब उन्होंने मारना बन्द किया तो उन्होंने कहा मेरा शरीर कठोर है वे आप के हाथ कोमल ।

समाज-सेवा :- विरजानन्द ने दयानन्द की दीक्षा देते समय कहा, "दयानन्द अब तक तुमने जो शिक्षा प्राप्त की है उसका देश भर में प्रचार करो ।" उन्होंने ऐसा ही किया । उन्होंने देश से अन्ध-विश्वास को खत्म किया। उन्होंने स्त्री-शिक्षा का प्रचार किया । उन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने में अपूर्व योगदान दिया । उन्होंने अछुतोद्धार पर जोर दिया और कहा इन्सान जन्म से छोटा या बड़ा नहीं होता, कर्म से होता है ।

महर्षि दयानन्द ने वैदिक सिद्धान्तों को स्थाई रूप के लिए आर्यसमाज की स्थापना की । विभिन्न नगरों में वेद-प्रचार के लिए आर्यसमाज के मन्दिरों की स्थापना की गई ।

एक दिन दयानन्द से जोधपुर महाराज के दरबार की वेश्या ने अपनी कठोर निन्दा सुनी तो जल उठी । उसने स्वामी जी के प्राण लेने का षड़यन्त्र रचा और इस कार्य में वह सफल हो गई । उस दुष्ट ने रसोइये के साथ मिलकर स्वामी जी को पिसा हुआ काँच दूध में मिलाकर दे दिया । उनके सारे शरीर में कांच फैल गया । अन्त में वे 30 अकतूबर, 1883 को निर्वाण को प्राप्त हुए ।

आज ऋषि जी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके बताये हुए सिद्धान्त मानवता की राह दिखा रहे हैं । उन्होंने जो ज्ञान दुनियां को दिया वह युगों तक अमर रहेगा ।

---

# दान–सूची उत्सव 1986

**Rs. 5701**

डी०ए०वी० हायर सैकेण्डरी स्कूल चण्डीगढ़

**Rs. 2000**

डी०ए०वी० कॉलेज, चण्डीगढ़

**Rs. 1000**

1. श्री ओम प्रकाश घई
2. एम.सी.एम. कॉलेज, चण्डीगढ़

**Rs. 800**

1. मै० राम लाल रमेश कुमार
2. सतलुज कन्स्सट्रक्शन कम्पनी
3. चौधरी कन्स्ट्रक्शन कम्पनी

**Rs. 621**

श्री न्यायमूर्ति प्रेम चन्द पंडित

**Rs. 501**

डी०ए०वी० माडल स्कूल, सैक्टर 15, चन्डीगढ़

**Rs. 500**

1. डी.पी. सिंघल
2. मै० इंडियन फारमरस् फर्टिलाइजर्ज़ कं०
3. हरिराम होस्टल
4. मै० कृषक भारती कोपरेटिव लिमिटेड
5. श्री के. एल. मेहता

**Rs. 447**

श्री चिन्त राम

**Rs. 301**

मै० दुर्गा भाई ऐण्ड कम्पनी

**Rs. 300**

1. श्री चमन लाल शर्मा
2. मै० पटियाला फारमेसी
3. मै० डी०ए०वी० फारमेसी जालन्धर
4. मै० अमर कण्स्ट्रक्शन कम्पनी
5. मै० नेशनल वुलेन मिलज़

**Rs. 251**

1. श्री कृष्ण कुमार
2. मै० रणवीर सिंह एण्ड कम्पनी

**Rs. 201**

1. श्री एच. एल. प्रवीन
2. श्री राज कुमार

**Rs. 200**

1. मै० अग्रवाल स्टोरेज़
2. हरयाणा स्टेट इलेक्ट्रोनिक्स् कार्पोरेशन
3. श्री जे० के० धीर
4. मै० एच. एस. एम. टी. सी.

5. हरयाणा स्टेट इण्डस्ट्रीयल डिवैलपमैन्ट कारपोरेशन
6. डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल

Rs. 150

मै० यूनाइटेड पेस्टिसाइडस्

Rs. 130

मै० किरण स्वीट्स

Rs. 126

डा० एस. पाल

Rs. 121

1. श्री राज पाल कोहली
2. श्री कर्नल गुरदास सिंह

Rs. 101

1. मै फ्रण्टियर कान्सट्रक्शन कम्पनी
2, कुमारी सुशीला सूद
3. श्री दुर्गा प्रसाद सूद
4. श्री धर्मेद्र सूद
5. महेंद्र पाल सूद
6. श्री बी एन डुनेजा
7. श्री जगदीश चन्द्र नागपाल
8. गुप्तदान
9. जी आई स्टाफ
10. जी आई एन स्टाफ
11. साहब दत्ता मल सन्तराम
12. आर्य समाज सैक्टर 19
13. कान्हा राम
14. श्री लाडु सिंह
15. श्री हर लाल
16. श्री ए. के. प्रधान
17. श्री सन्त कुमार
18. मै० गोपाल सैनीटरी स्टोर
19. डा. आई. एस डप्पल
20. श्री कुलदीप कुमार खडूजा
21. श्री एच. के. यादव
22 श्री पृथ्वी सिंह
23. श्री सुरेन्द्र सिंह
24. श्री राय हेम चन्द
25. ,, राम जी लाल शर्मा
26. ,, के. आर. अग्रवाल
27. ,, राजेन्द्र कुमार
28. , रामनाथ कटारिया
29. ,, सूरज प्रकाश
30. ,, बलवान सिंह
31. श्री जे एन शर्मा
32. मै० दुर्गा सप्लायरज
33. ट्यूबवेल ट्रेडर्स
34. श्री बी. एन. गुलाटी
35. डा, डी. आर बौरी
36. पावर जेनेरेशन मशीनस
37. श्री कृष्ण लाल
38. ,, राजीव शास्त्री
39. ,, ओ. पी. कपूर

Rs. 100

1. ग्रार्य समाज सैक्टर-16
2. श्रीमती सन्तोष मनमोहन
3. श्री बी. एस. बहल
4. ग्रार्य समाज सैक्टर-22
5. श्री नरेन्द्र नाथ
6. मै० राम कृष्ण एण्ड कम्पनी
7. श्रीमती सुशीला
8. श्री जवाहर लाल गुप्ता, वकील
9. श्री यशपाल
10. श्री एस.एस. रिखी
11. श्री एन.डी. महान

Rs. 52

श्री बंशी लाल भीला

Rs. 51

1. श्री के.के. दैवत्त
2. ,, देस राज सेठी
3. ,, चोखा मल
4. ,, मनोचा
5. ,, ग्रवनि कुमार गप्ता
6. ,, नारायण दास वधवा
7. ,, ग्रार्थ समाज सैक्टर-27
8. ,, नन्द राम
9. ,, जे सिंह
10. ,, ग्रग्रवाल स्टोर
11. ,, देव राज
12. ,, स्त्री ग्रार्य समाज सैक्टर-18
13. ,, ग्रार्य समाज सैक्टर-32
14. ,, बी.बी. गुप्ता
15. ,, योगेन्द्र कौशल
16. ,, एच.एल. खन्ना
17. ,, प्रकाश चन्द्र
18. ,, त्रिलोक सिंह
19. ,, सुशीला कृपाल सिंह
20. श्रीमती उषा डोगरा
21. मै० मीरा सेल्ज

Rs 50

1. श्री देश राज
2. श्री लाल सिंह
3. श्रीमती विमला खन्ना
4. श्री डी. ग्रार दत्त
5. श्रीमती रीता कपूर
6. श्रीमती करतार देवी
7. श्री कर्नल रिसाल सिंह
8. श्री टी.सी कठहालिया

Rs. 31

1. चौधरी रूप चन्द
2. पाल मेडिकल हाल
3. श्री प्रवीण
4. श्री धुल चन्द
5. श्री अविनाश चन्द्र व श्रीमती उषा
6. श्री एस.एस. आनन्द
7. श्रीमती कुसुम आहुजा
8. श्री परमजीत सिंह
9. एअर कॅमाण्डर केशव

Rs 21

1. श्री राजेन्द्र कुमार
2. श्री आर.पी. विग

3. श्रीमती सुमित्रा सेठी
4. ,, शान्ति देवी कपूर
5. आर्य समाज सैक्टर-40
6. श्री बाबू राम
7. ,, एस एन शर्मा
8. ,, आलोक कुमार
9. श्रीमती रश्मि
10. श्री धुरेन्द्र पाल गुप्ता
11. ,, कृष्ण लाल
12. ,, हरवंश लाल शर्मा
13. श्रीमती सावित्री देवी
14. गनेशी राम
15. श्री राजेन्द्र कुमार
16. गुप्तदान
17. सरदार चन्दन सिंह
18. श्री एस के विग
19 श्रीमती विमला नायर
20 ,, मंजू चान्द
21. ,, अरोड़ा
22. श्री ओ.बी. सेठी
23. कर्नल पी. पी. एस. ठाकुर
24. श्रीमती आर.पी. विग
25. श्रीमती सेठी

# उत्सव १६८६ के लिए दान एकत्रित करने वाले

| | | राशि |
|---|---|---|
| 1. | श्री यशपाल पाई | 14,400 |
| 2. | ,, रिसाल सिंह | 5,000 |
| 3. | ,, ए. सी. गुप्ता | 2,000 |
| 4. | ,, हरवंश लाल खन्ना | 1,641 |
| 5. | ,, पी. सी. महाजन | 745 |
| 6. | ,, प्रेम लाल चड्ढा | 687 |
| 7. | डा० एस० पाल | 517 |
| 8. | ,, दुर्गा दास सूद | 404 |
| 9. | ,, वी. एन. डुडेजा | 255 |
| 10. | ,, शान्ति स्वरूप आनन्द | 222 |
| 11. | ,, देस राज सेठी | 222 |
| 12. | ,, आर. पी. कोहली | 161 |
| 13. | ,, हंस स्वरूप शर्मा | 110 |
| 14. | ,, बाल कृष्ण आर्य | 101 |

# भवन–निर्माण के लिए दान प्राप्त
# 1-4-86 to 30-9-1987

| | | |
|---|---|---|
| 1 | आर्य स्त्री समाज सैक्टर 7 चण्डीगढ़ | 137000 |
| 2 | श्रीमती करतार देनी कपूर | 51,000 |
| 3 | डा० राम प्रताप सैक्टर-16 | 20,000 |
| 4 | श्री कश्मिरी लाल मेहता | 10,000 |
| 5 | ,, जौहरी लाल | 10,000 |
| 6 | श्रीमती सुमित्रा गन्डोक | 10,000 |
| 7 | श्री दुर्गादास सूद | 8,000 |
| 8 | ,, सन्तराम ऐरी | 5,000 |
| 9 | श्रीमती ऐरी इंग्लैण्ड (द्वारा श्री राम नाथ कपूर) | 5,000 |
| 10 | न्यायमूर्ति प्रेम चन्द पंडित | 3,000 |
| 11 | डी ए वी हायर सैकण्डरी स्कूल, सैक्टर-8, चण्डीगढ़ | 22,00 |
| 12 | डा. एस. पाल | 2,100 |
| 13 | श्री किशन दत्त नैय्यर | 2,100 |
| 14 | ,, के. डी. नारद | 2.100 |
| 15 | कुमारी सुशीला सूद | 2,000 |
| 16 | गुप्तदान | 2,000 |
| 17 | गोपाल राय करतार कोर ट्रस्ट | 5,000 |
| 18 | सी. एल. अग्रवाल डी.ए.वी. माडल हाई स्कूल, सैक्टर-7, चण्डीगढ़ | 1100 |
| 19 | चमन लाल डी.ए.वी.हायर सेकण्डरी स्कूल पंचकूला | 1001 |
| 20 | श्री राज पाल कोहली | 1100 |
| 21 | ,, राम नाथ कपूर | 1100 |
| 22 | डी.ए वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-8, चण्डीगढ़ | 1000 |
| 23 | श्री योगेन्द्र पाल कपूर | 1000 |
| 24 | चौधरी रिसाल सिंह | 1000 |
| 25 | श्री हरिवंश लाल खन्ना | 1000 |
| 26 | ,, डा. आर. पी. वीग | 1000 |
| 27 | श्रीमती सत्यावती | 1000 |
| 28 | ,, इन्द्रा वधवा | 1000 |
| 29 | गुप्तदान | 1000 |
| 30 | श्री मनमोहन जी | 505 |
| 31 | श्री मेहतानी | 501 |
| 32 | ,, किशन चन्द | 500 |
| 33 | कर्नल गुरदास सिंह | 500 |
| 34 | श्री प्रकाश सिंह | 500 |
| 35 | ,, कृष्ण कुमार | 251 |
| 36 | डा० डी. आर. बौरी | 250 |
| 37 | श्री एस. वी. कपूर | 200 |
| 38 | ,, नारायण दास वधवा | 101 |
| 39 | पब्लिक पावर मशीनज् | 101 |
| 40 | मै० के. जी ट्रेडिंग कम्पनी | 101 |
| 41 | डा० कृष्ण कुमार शर्मा | 101 |
| 42 | श्री वेद प्रकाश बेरी | 101 |
| 43 | ,, कृष्ण लाल | 100 |
| 44 | श्रीमती शीतल शर्मा | 51 |
| 45 | श्री रमेश चन्द्र | 50 |
| 46 | फर्नीचर पैलेस | 50 |

# संस्कारों से प्राप्त धन 1986-87

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री कृष्ण कुमार मीरा सेल्स का०, चण्डीगढ़ | 2100 |
| | **1000 रु० या अधिक** | |
| 2- | श्रीमती अरोड़ा (स्व. श्री यशपाल अरोड़ा की स्मृति में | 1000 |
| 3- | श्रीमती सुदेश व अरुण मैहन (स्व. ए. एस. मैहन की स्मृति में | 1100 |
| 4- | श्रीमती शान्ति सैनी | 1100 |
| | **500 रु.** | |
| 5- | श्री मनमोहन जी | 505 |
| 6- | ,, के. के. अग्रवाल व श्रीमती सुशीला अग्रवाल | 500 |
| 7- | ,, हरवंश लाल खन्ना | 500 |
| 8- | ,, शतीश कुमार सैनी | 500 |
| | **250 रु.** | |
| 9- | श्री शिवनाथ रविकान्त | 250 |
| 10- | ,, प्रेम चन्द भाटिया | 251 |
| 11- | श्रीमती भसीन | 250 |
| 12- | श्री राना परिवार | 251 |
| 13- | श्रीमती शकुन्तला देवी | 250 |
| | **200 रु.** | |
| 14- | श्री सी एल कपूर | 205 |
| 15- | ,, अशोक शैलेन्द्र गुलाटी | 200 |
| 16- | ,, विश्वमित्र मल्होत्रा | 200 |
| 17- | ,, इन्द्र कुमार आर्य | 200 |
| 18- | श्रीमती शान्ता दुबे | 200 |
| 19- | श्री जगदीश | 201 |
| 20- | ,, महेंद्र पाल सूद | 150 |
| | **101 रु.** | |
| 21- | श्री सुनील | |
| 22- | ,, कृष्ण कुमार | |
| 23- | ,, के. के. सचदेव | |
| 24- | ,, सुशील जी | |
| 25- | ,, ओम प्रकाश अरोड़ा | |
| 26- | ,, दुर्गदास सूद | |
| 27- | श्रीमती स्वर्ण देवी | |
| 28- | श्री जवाहर लाल नन्दा | |
| 29- | श्रीमती वेद महाजन | |
| 30- | श्री नवीन | |
| 31- | श्रीमती व श्री मेहर चन्द | |
| 32- | श्री दिवाकर पाहुजा | |
| 33- | ,, रिसाल सिंह | |
| 34- | ,, सुनील महाजन | |
| 35- | ,, रवीन्द्र कुमार | |
| 36- | ,, प्रेम पाल चड्ढा | |
| 37- | श्रीमती शीलावन्ती | |
| 38- | जस्टिस पी.सी. पंडित | |
| 39- | श्री विश्वनाथ रविकान्त | |
| 40- | श्री प्रकाश सिंह | |
| 41- | सी.ई.सी.आई.एल हरपाल | |

42- कृष्ण चन्द्र
43- जी.डी. वर्मा
44- राजीव कपूर
45- नरेश शरण व गायत्री
46- बी. एस बहल
47- सुरेन्द्र व श्रीमती इला
48- प्रदीप व श्रीमती निशा
49- कृष्ण चन्द्र ग्रोहरी

60-70 रु०

50- श्री महेन्द्र पाल सूद
51- ग्रार्य स्त्री समाज

50-51 रु०

52- श्री बी:के, सरीन
53- ,, खण्डूजा परिवार
54- ,, हरिपाल
55- ,, राजेश
56- ,, राम कृष्ण पोपली
57- ,, टी.के. सहगल
58- ,, राजेश पोपली
59- ,, सरदारी लाल मल्होत्रा
60- ,, वी.पी. ग्रग्रवाल
61- श्री वलविन्द्र
62- ,, रमेश चन्द्र
63- ,, ग्रशोक कुमार
64- ,, ग्रवनि
65- ,, श्रीमती गीता
66- ,, श्री हुकम चन्द
67- ,, डा० तलवार
68- श्रीमती विशन देवी
69- श्री प्रकाश सिंह
70- श्री राजेश्वर तलवाड़
71- श्रीमती योगेन्द्र ग्ररोड़ा
72- श्री यशपाल खन्ना
73- श्री ग्राशु विवेक
74- ,, घनराज, यदुनाथ
75- श्रीमती गजमति (ग्रमेरिका से)
76- श्री जी.डी. भगत
77- ,, प्रकाश सिंह
78- ,, ग्रमृत लाल सुशील
79- ,, जी.डी. सूद
80- ,, विजय दत्त
81- श्रीमती वीना चावला
82- श्री संजय दत्त
83- ,, एस.एस. जैन
84- श्रीमती कुम्बा
85- श्री जगदीश कपूर
86- श्रीमती कौशल्या देवी
87- ,, प्रतिभा मित्तल
88- श्री रामपाल व श्रीमती ववीता
89- ,, एस० कुमार
90- ,, ग्रोम प्रकाश दुग्रा
91- ,, राजीव श्रीमती ग्रर्चना
92- ,, विनोद कपुर
93- ,, ग्ररुण कुमार लाल
94- ,, खण्डूजा परिवार
95- ,, ग्रनिल खन्ना
96- ,, डा० तलवाड़

### 31 से 50 रु०

97- श्री करन त्रैहन
98- श्रीमती शान्ता कुमारी
99- श्री अंकुश व नेहा
100- ,, विनोद
101- ,, डा० महेन्द्र वर्मा
102- ,, श्रीमती विमला भसीन
103- ,, कृष्णा सेठ
104- ,, श्री राजीव
105- ,, विजय
106- ,, विजय दत्त
107- ,, बृज भूषण गुप्ता
108- ,, महेन्द्र कुमार

### 21-25 रु०

109- श्री राकेश धीर व श्रीमती अनिता
110- श्रीमती कौशल्या वर्मा
111- श्री आर.डी. सैनी
112- ,, रमण जी
113- श्रीमती अर्चना
114- श्री शीतल प्रसाद गुप्ता
115- ,, हरिवंश लाल
116- ,, प्रवीण नैय्यर
117- ,, हरिवंश लाल खन्ना
118- ,, के.के. वर्मा
119- ,, यशपाल घई
120- ,, विनोद
121- ,, गौरव
122- ,, गुप्तदान
133- ,, रजनीश दीवान
124- ,, वेद व्रत
125- ,, हरिवंश लाल खन्ना
126- श्रीमती करतार देवी
127- श्री नरेश
128- ,, टेक चन्द जैन
129- ,, नारायण पंडित
130- ,, विकास चोपड़ा
131- ,, बनारसी लाल भल्ला
132- ,, सुधीर कोहली
133- ,, महेन्द्र सिंह
134- श्रीमती सुनीता
135- श्री अर्जुन कुमार मेहता
136- ,, पवन कुमार
137- ,, वेदव्रत शर्मा
138- ,, सुधीर दीवान
139- ,, धुरेन्द्रपाल गुप्ता
140- ,, विवेक चड्ढा
141- ,, वी.एस. डुडेजा
142- ,, खण्डूजा परिवार
143- ,, सोनिया स्टील
144- ,, अधिराज
145- ,, हरिवंश लाल खन्ना
146- श्रीमती कृष्णा मेहता
147- श्री वीरेन्द्र लाल
148- श्रीमती शान्ता रानी मलिक
149- श्री हरिवंश लाल खन्ना
150- ,, वी.के. लुम्बा
151- श्रीमती शान्ति देवी कपूर

152- श्री सतीश तलवाड़
153- ,, सुदर्शन कपूर
154- हर्ष देव वाली
155- श्रीमती शान्ति देवी कपूर
156- आयुष्मति मीनाक्षी व श्री अनुराग
157- श्री प्रवीण
158- ,, मलिक ज्वैलर्स
159- श्रीमती खोंसला
160- ,, स्वराज लाम्बा
161- ,, किबुषी वोहरा
162- श्री अमर नाथ अग्रवाल
163- श्रीमती शान्ति देवी कपूर
164- श्री ज्ञानीराम जी
165- ,, आनन्द स्वरूप त्रेहन
166- ,, सिद्धार्थ सूद
167- ,, सेहन्त
168- ,, नरेश जैन
169- ,, पायल कैप्टन कपूर
170- ,, कर्नल डी.आर. दत्त
171- श्रीमती शान्ति देवी कपूर
172- श्री वी.डी चौधरी
173- ,, आशुदीप
174- ,, ड० Y.K. वत्रा
175- ,, अवनि गुप्ता
176- ,, सोम नाथ
177- ,, सुधीर कोहली
178- ,, महेन्द्र

# अन्य प्राप्तियां 1986-87

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री दुर्गा दास सूद | 6045 |
| 2 | श्रीमति शान्ता, सरला, सविता और बहनें | 2402 |
| 3 | श्री कृष्ण कुमार | 2100 |
| 4 | ,, जे. डी. वर्मा | 500 |
| 5 | ,, चिन्त राम ठेकेदार | 447 |
| 6 | ,, हंस राज गुप्ता | 400 |
| 7 | आर्य स्त्री समाज, सैक्टर 7 | 373 |
| 8 | श्री जस्टिस पी. सी. पण्डित | 304 |
| 9 | ,, जोहरी लाल | 250 |
| 10 | ,, ब्रह्म दत्त | 201 |
| 11 | ,, बी. बी. मक्खड़ | 200 |
| 12 | ,, सन्दीप शर्मा | 125 |
| 13 | ,, रमेश चावला | 111 |
| 14. | श्रीमती स्नेह महाजन | 101 |
| 15. | ,, शान्ति देवी | 101 |
| 16. | ,, मोहिनी पाठक | 101 |
| 17. | श्री दिवाकर | 101 |
| 18. | ,, पी.सी. हरपाल | 101 |
| 19. | ,, काशीराम चावला | 101 |

20. श्रीमती सुरेश 101
21. श्री सहदेव महाजन 101
22. ,, आर.पी. विग 100
23. ,, के.के. दैवत्त 100
24. ,, एल.एम. खन्ना 100
25. ,, वी.एस. वाटल 100
26. ,, ओमप्रकाश 100
27. हरियाणा रोड़वेज गुड़गांव के कर्मचारी 82
28. ,, ,, स्टाफ गुड़गांव 71
29. श्री नन्दपाल 67
29.-ऐ ,, हरिवंशलाल खन्ना 63
30. ,, धनराज 55
31. ,, राम रंग 51
32. ,, विशेश्वर 51
33. ,, आर.डी. गर्ग 51
34. ,, ओ.पी. गुप्ता 51
35. हरियाणा रोड़वेज के कर्मचारी 51
36. श्री सुभाष गुप्ता 51
37. ,, रमेश चन्द्र 50
38. श्रीमती करतार देवी कपूर 50
39. ,, इन्द्रा वधवा 50
40. श्री सुधीर दीवान 50
41. ,, ओमप्रकाश गुप्ता 50
42. ,, प्रेम कुमार 50
43. ,, अवनि गुप्ता 42
44. श्रीमती शान्ति देवी कपूर 41
45. हरियाणा रोड़वेज बॉडी बिल्डिंग ब्रांच 37
46. ,, ,, नजारत ब्रांच 32
47. श्री के.के. अग्रवाल 32
48. ,, महेन्द्रपाल सूद 32
49. श्रीमती राज 31
50. श्रीमती विद्यावती अग्रवाल 21
51. श्री यशपाल घई 21
52. ,, प्रेम आनन्द 21
53. ,, खण्डूजा परिवार 21
54. ,, रणधीर सैनी 21
55. ,, शीतल प्रसाद गुप्ता 21
56. ,, सोम नाथ 21
57. ,, गुरुदेव 21
58. ,, लाल चन्द 21
59. श्री राज कुमार 21

# दान सूची आर्य स्त्री समाज १६८७

1. श्रीमती जनक रानी सूरी की स्मृति में 1100
2 ,, जनक मलहोत्रा 628-25
3 ,, सुशीला पासी 500
4 श्री देवेन्द्र कुमार 501

200 रु. से 265 रु.

5 ,, धनीराम असोत्रा
6 श्रीमती आदर्श कुमारी टाडरी
7 ,, पुष्पा नैयर
8 श्री वेदप्रकाश मलहोत्रा
9 श्रीमती शकुन्तला चान्दना
10 श्री राजेश पोपली
11 ,, सेठ
12 श्रीमती विद्यावती

100 रु० उससे अधिक

13 श्रीमती राज कौशिक
14 ,, विद्यावती सहगल
15 ,, सुमित्रा कपिल
16 ,, राज कुमारी
17 श्री चौहान
18 ,, सरदारी लाल
19 ,, संदीप आहूजा
20 ,, एस.सी. गुप्ता
21 ,, मनोहर लाल
22 ,, जे.एल. मोजठिया
23 ,, वेदप्रकाश
24 ,, विजय
25 ,, रामकृष्ण पोपली
26 ,, राजेश पोपली
27 ,, नन्दलाल पोपली
28 ,, स्वतन्त्र कपूर
29 ,, मनोहर सचदेवा
30 श्रीमती वीना
31 ,, कौशल्या देवी
32 ,, शान्तिदेवी महाजन
33 ,, करुण
34 ,, रामा घई
35 ,, कृष्णा भसीन
36 ,, निर्मल पुरी
37 ,, शकुन्तला लैली
38 ,, विद्यावती खंडूजा
39 ,, विमला देवी भटनागर
40 ,, अचला
41 ,, सुशीला पासी
42 ,, जैन
43 ,, सीता भसीन
44 विद्यावती समाना
45 ,, कौशल्या मेहता
46 ,, मोहिनी शर्मा
47 सुदर्शन वत्रा
48 कर्मदेवी शर्मा
49 ,, मुन्ना
50 वेद महाजन
51 ,, विद्यावती कपूर
52 ,, हरवंश लाल जीवामी
53 ,, लीलावती कुमराह

54 शशि कान्ता
55 ,, सुनीता महाजन
56 श्री ड० लीला

40 से 75 रु०

57 श्री के.के अग्रवाल
28 ,, सरदारी लाल
59 ,, भोला
60 ,, दुग दास सूद
61 ,, संजीव कुमार
62 ,, सुभाष आर्य
63 ,, सतीन्द्र मलहोत्रा
64 ,, हरी कृष्ण बख्शी
65 ,, प्रेमपाल चड्डा
66 सरदारी लाल
67 ,, सुनील
68 ,, विजय व यशपाल
69 ,, यशपाल खन्ना
70 ,, अश्विनी
71 ,, नन्द लाल
72 ,, श्रीमती प्रमिला
73 ,, राजका
74 ,, उमा
75 , ओमा
76 , सुशीला
77 कौशल्या मेहता
78 ,, नन्दी
79 ,, साविश्री सोई
80 ,, सत्या जी अनेजा
81 ,, विद्यावमी शर्मा
82 ,, विद्यावती सहगल
83 गुप्तदान
84 श्रीमती पुष्पा खोसला
85 ,, शकुन्तला बंसल
86 ,, सुरेन्द्र
87 ,, पाल
88 ,, प्रेमदेवी दीवान
89 ,, कृष्णा ग्रोवर
90 ,, स्वतन्त्र सचदेवा
91 ,, यशपाल
92 ,, राज मैहंगी
63 ,, सुशीला पासी
94 ,, शान्ति देवी
95 ,, ओम
96 ,, वेद महाजन
97 ,, अनिल सरदाना
98 श्री रामकृष्ण पोपली
99 ,, राजेश कुमार
100 ,, मोहन
101 ,, मलिक
102 ,, पी. सी. पण्डित
103 ,, के. के. देवत
104 ,, ओम प्रकाश कपूर
105 ,, कैलाश तलवाड़
106 ,, सत्यपाल तलवाड़
107 ,, तरसेम तलवाड़
108 श्रीमति सुशीला चुघ

109 श्रीमति फूल
110 ,, वेद प्रभा
111 ,, उषा पाल
112 ,, स्नेह प्रभा
113 ,, सुशीला अरोड़ा
114 ,, सुहागवती
115 ,, प्रकाशवती घई
116 ,, विनोद
117 ,, शीलावती कुमरा
118 ,, उषा घई
119 ,, कृष्णा चौधरी
120 ,, कुसुम कक्कड़
121 ,, शान्ता शास्त्री
122 ,, सुशीला सूद
123 ,, कौशल्या सूद
124 ,, कौशल्या वर्मा
125 ,, रमा चड्ढा
126 ,, पिंकी
127 ,, विद्यावती खड्जा
128 ,, दयावती गैन्द
129 ,, संयोगिता मल्होत्रा
130 ,, वेद महाजन
131 ,, मदन शान्ता
132 ,, कान्ता
133 ,, इ.कुन्तला
134 ,, शिवावन्ती सिक्का
135 ,, सुशीला सोहवती

20 रु. से 31 रु.

136 श्रीमती पूनम कोहली
137 श्रीमति पाल
138 ,, प्रेमदेवी दीवान
139 ,, उर्मिल मेहता
140 ,, शशि कान्ता
141 ,, सत्या खुराना
142 ,, करतार देवी कपूर
143 ,, विशन देवी पोपली
144 ,, उर्मिल मेहता
145 ,, इन्द्रा वधवा
146 ,, रेणु खन्ना
147 ,, उर्मिला रानी
148 ,, चन्द्र कला
149 ,, दुर्गा देवी
150 ,, सत्या
151 ,, सुशीला अग्रवाल
152 ,, शिवान भनोट
153 ,, राज कुमारी
154 ,, शान्ति खोसला
155 ,, कमला डोगरा
156 ,, सुनील सरीन
157 ,, सुनीता सरीन
158 ,, सन्तोष
159 ,, मेहता
160 ,, अहूजा
161 ,, मोहिनी सहगल
162 ,, राजरानी अहूजा
163 ,, राधा दीवान
164 ,, सीमा दीवान
165 ,, भागवन्ती

166 श्रीमति ज्ञानवती महाजन
167 ,, सन्तोष कपूर
168 ,, सेवावन्ती सिक्का
169 ,, सत्या चड्डा
170 ,, तलवाड़
171 ,, भगवान देवी
172 ,, वोहरी
173 ,, ज्ञानवती महाजन
174 ,, पुष्पा
175 ,, संयोक्त मल्होत्रा
176 ,, प्रकाशवती
177 ,, कृष्णा मेहता
178 ,, लाजवती तलवाड़
179 ,, वन्दना कुमारी
180 ,, रत्न देवी
181 ,, प्रेम कुमारी
182 ,, कौशल्या वर्मा
183 ,, विमला
184 ,, उमा
185 ,, सुशीला पोपली
186 ,, आशा शर्मा
187 सत्या खुराना
188 ,, विमला आहूजा
189 ,, इन्द्रा सहदेव
190 ,, मीना सरीन
191 .. उषा भसीन
192 .. उषा गुप्ता
193 .. उषा पाल
194 .. कौशल्या मेहता
195 श्रीमति सोई
196 .. जनक मल्होत्रा
197 .. कान्ता घई
198 .. ग्रोवर
199 .. प्रेमवती कोहली
200 .. सत्या शर्मा
201 .. सरोज अग्रवाल
202 .. शान्तिदेवी कोछड़
203 .. आदर्श दुलारी
204 .. यश रानी
205 .. वीना
206 .. इन्द्रा प्रभाकर
207 .. लाजवती तलवाड़
208 .. राजरानी
209 .. भगवती मल्होत्रा
210 .. कैलाशवती
211 .. रजनी जुनेजा
212 .. विमला
213 .. सत्या दुग्गल
214 .. स्वर्णलता पुंछी
215 .. सरला विग
216 . सुमित्रा गदकू
217 .. संयोगिता
218 .. शकुन्तला चोपड़ा
219 ,, राजेन्द्र चावला
220 .. लीलावती
221 .. सुखलाल
222 .: ज्योति
223 .. जनक घई

224 श्रीमति सन्तोष
225 ,, सावित्री सूरी
226 ,, कीमी
227 ,, नीमी
228 ,, लीलावती भसीन
229 ,, दर्शना मेहरा
230 ,, हरवंस कोर
231 ,, शकुन्तला वर्मा
232 ,, रमा वेदी
233 ,, राजरानी
234 ,, सावित्री घई
235 ,, सत्यवती खुराना
236 ,, कृष्णा सेठ
237 ,, सुमित्रा अरोड़ा
238 ,, सुशीला सूद
239 ,, करतार देवी
240 ,, राज
241 ,, देवकी माता
242 ,, सन्तोष
243 ,, पद्मा रानी
244 ,, प्रेम
245 ,, विमला
246 ,, साईं कृष्णा
247 ,, साधना
248 ,, विमला
246 ,, वोहरी
250 ,, पुष्पा
251 ,, चोपड़ा
252 श्रीमति शीला
253 ,, शकुन्तला आनन्द
254 ,, निर्मला शर्मा
255 ,, उमा वर्मा
256 श्री सुकुमार जैरथ
257 ,, मदन लाल सोभती
258 ,, सुनील अग्रवाल
259 ,, राज गुरु मेहता
260 ,, उमेश
261 ,, आलोक गुप्ता
262 ,, विद्या प्रकाश कपूर
263 ,, सूरज प्रकाश मल्होत्रा
264 ,, मनोहर लाल सचदेवा
265 श्रीमति प्रेम जिज्ञासु
266 श्री प्रेम कुमार आनन्द
267 ,, प्रमोद दत्त
268 ,, सरदाना परिवार
269 ,, अश्विनी कुमार ग्रोवर
270 ,, कोहली
271 ,, मदन लाल अग्रवाल
272 ,, हरिवंश लाल चन्दा
273 ,, कुमार
274 ,, दीना नाथ गुप्ता
275 ,, शीतल प्रसाद व मीरा गुप्ता
276 ,, गुरदियाल सिंह
277 ,, दुर्गादास नैयर
278 ,, डा० पाल
279 ,, एस० एल०

280 ,, वेदी स्टोर
281 ,, सुरेन्द्र
282 ,, लक्ष्मी फारमेसिकल
283 ,, मित्रा
284 ,, वहृमिंदर सूद
285 श्रीमति के० के० अग्रवाल
286 ,, श्रीमती आशा शर्मा
287 श्री सुरेन्द्र कुमार
288 ,, सतीश सेठ

# आर्य समाज के सदस्यों की सूची

| सैक्टर 4 | | | फोन |
|---|---|---|---|
| | श्री नरेश कुमार नैय्यर | 2 - 4 | |
| 1 | श्री जस्टिस टेक चन्द | 32 - 4 | 24228 |
| 2 | श्री राजेन्द्र नाथ मित्तल | 31 - 4 | |
| 3 | श्रीमति विद्यावती अग्रवाल | 21-4 | 24221 |

**सैक्टर 7**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री जे. के. धीर | 27/7 | 29992 |
| 2 | ,, सुदर्शन कपूर | 906 | |
| 3 | ,, अविनाश चन्द्र गुप्ता | 731 | |
| 4 | श्रीमती उषा गुप्ता | 731 | |
| 5 | श्री कृष्ण कुमार सहदेव | 889 | 27306 |
| 6 | श्रीमती इन्द्रा सहदेव | 884 | |
| 7 | श्री अशोक कुमार | 217 | |

**सैक्टर 7-सी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री योगेण्द्र सिंह | 1504 | |
| 2 | ,, रघुवीर सिंह | 1507 | |
| 3 | ,, आर. डी. तलवाड़ | 1535 | |
| 4 | ,, सन्त कुमार महाजन | 1585 | 20773 |
| 5 | ,, कृष्ण चन्द सोनी | 1586 | |
| 6 | ,, पं० आशु राम आर्य | 1594 | 29462 |
| 7 | श्रीमती नारायण देवी आर्य | ,, | |
| 8 | श्री राम नाथ कपूर | 1607 | 29576 |
| 9 | श्रीमति मती ज्ञानवती कपूर | ,, | |
| 10 | श्री वेदव्रत शर्मा | 1608 | |
| 11 | ,, कृष्ण चन्द | 1591 | |
| 12 | ,, राजपाल कोहली | 1578 | |
| 13 | ,, प्रेमपाल चड्ढा | 1785 | |
| 14 | ,, छजु राम गर्ग | 1617 | |
| 15 | ,, एल. डी. वर्मा | 948 | |

**सैक्टर 8-ए**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री देवराज अग्रवाल | 143 | |
| 2 | ,, सुरेश कुमार | 14 | |
| 3 | ,, के. के. दैवत | 73 | 23837 |
| 4 | ,, सुधीर दीवान | 109 | |

**सैक्टर 8 बी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री रमेश चन्द्र सेतिया | 502 | |
| 2 | श्रीमती कमला डोगर | 654 | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 3 | ,, रघुवीर दत्ता | 745 | |
| 4 | ,, दिलबाग राय दत्ता | 722 | |
| 5 | ,, बाल कृष्ण आर्य | 635 | |
| 6 | ,, बी. आर. खुराना | 703 | |
| 7 | ,, लक्ष्मण दास नागपाल | 698 | |
| 8 | ,, के. एल. मेहता | | |

सैक्टर 8-सी

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री डा. देस राज चौरी | 1616 | |
| 2 | ,, राम रंग चौधरी | 1019 | |
| 3 | श्रीमती ईश्वर देवी | 11 | |
| 4 | ,, सुशीला मलिक | 1020 | |
| 5 | श्री हरबंस लाल खन्ना | 1034 | |
| 6 | ,, ओम प्रकाश घई | 1054 | 23992 |
| 7 | ,, यशपाल घई | 1055 | 41366 |
| 8 | ,, विजय पाल घई | 1054 | |
| 9 | श्रीमती डा. कृष्णा मेहता | 1061 | |
| 10 | ,, मती कान्ता घई | 1024 | |
| 11 | ,, मती कृष्ण भसीन | 1063 | |
| 12 | श्री विमल भसीन | ,, | |
| 13 | ,, मती मेहता | 1028 | |
| 14 | ,, शान्ति स्वरूप आनन्द | 1180 | 26061 |
| 15 | ,, मती प्रकाश वती आनन्द | ,, | |
| 16 | ,, प्रेम कुमार आनन्द | ,, | |
| 17 | ,, मती रूप रानी मल्होत्रा | 1239 | |
| 18 | ,, मती सत्यवती सचदेवा | 1235 | |
| 19 | ,, मती प्रीतम देवी सोई | 1255 | |
| 20 | ,, ज्ञान चन्द वर्मा | 1257 | |
| 21 | ,, मती पुष्पा मधोक | 1226 | |
| 22 | ,, मती सत्यावती खुराना | 1048 | |
| 23 | ,, डा० राजपाल विग | 1208 | |
| 24 | स्व. श्रीमति कमला घई | 1054 | |
| 25 | श्री सुधीर कुमार घई | 1024 | |
| 26 | ,, मती रेणु घई | 1024 | |
| 27 | ,, डा० एस. पाल | 1010 | |
| 28 | ,, वीरेन्द्र कुमार जगड़ा | 1251 | |
| 29 | ,, डा. के. एस. वात्स्यायन | 1131 | 42100 |
| 30 | ,, कृष्ण कुमार अग्रवाल | 766 | 42427 |

सैक्टर 9

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | ,, के. के. अग्रवाल | 23 | |
| 2 | ,, मती शशि गुजराल | 204 | |
| 3 | ,, आर. एल. कक्कड़ | 225 | |

सैक्टर 11

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री रिसाल सिंह | 97 | 25620 |
| 2 | ,, मती उर्मिला देवी | ,, | ,, |
| 3 | ,, मती बिमला चौधरी | ,, | ,, |
| 4 | ,, मती बृज रानी | 12 | |
| 5 | ,, रतीश वर्मा | 638 | |
| 6 | ,, वेद प्रकाश अग्रवाल | 116 | |
| 7 | ,, अमर चन्द जैन | 84 | |
| 8 | ,, जगदीश मित्र घई | 118 | |
| 9 | ,, बाल किशन दीवान | 18 | 29748 |

सैक्टर 16

| | | |
|---|---|---|
| श्री के०के० धवन | 88 | 25639 |

सैक्टर 18

| | | |
|---|---|---|
| 1 | ,, श्री वेद व्यास बेदी | 148 |
| 2 | ,, मती रमा देवी | 11 |
| 3 | ,, प्रि. हंस स्वरूप | 577 |
| 4 | ,, तुलसी राम कपूर | 570 |
| 5 | ,, प्रकाश कपूर महाजन | 540 |
| 6 | ,, कुलदीप खण्डूजा | 1330 |
| 7 | ,, पी. सी. नन्द | 1192 |
| 8 | ,, ए. के. क्वात्रा | 538 |
| 9 | ,, यशपाल सेठ | 419 |

पंचकूला सैक्टर 8

श्री बी. वी. गक्खड़ पंचकूला

## सैक्टर 19

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री दुर्गादास सूद | 19 | 29853 |
| 2 | ,, धर्मेन्द्र सूद | 19 | |
| 3 | ,, महेन्द्र सूद | 19 | |
| 4 | ,, हरिकिशन तलवाड़ | 121 | 20174 |
| 5 | ,, सत्य प्रकाश आर्य | 123 | |
| 6 | ,, देस राज सेठी | 1068 | 44470 |
| 7 | ,, डा. आर. के. गुप्ता | 3039 | |

## सैक्टर 20

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | ,, श्री रघुवीर शरण शास्त्री | 626 | |
| 2 | ,, धरेन्द्र पाल गुप्ता | SCF 9/10 | 28412 |
| 3 | ,, मनमोहन हुड्डिया | 1042 | |
| 4 | ,, मती प्रेम पाल | 329 | |
| 5 | ,, मनोहर भान | | |

## सैक्टर 27

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री भोला राम शर्मा | 45 |
| 2 | ,, बी. एन. डुडेजा | 103 |
| 3 | ,, जे० एम० वर्मा | 165 |
| 4 | ,, छन्दमोहन सेठी | 162 |
| 5 | ,, महावीर गौतम | 3042 |
| 6 | ,, के. के. चड्डा | 2220 |
| 7 | ,, तिलक राज टंडन | |
| 8 | ,, सन्त राम गांधी | 3312 |
| 9 | ,, लाल चन्द मेहता | |
| 10 | ,, कवर भान | 3281 |
| 11 | ,, अतर सिंह | 1192 |

## सैक्टर 28

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री पुरषोत्तम सिंह जुनेजा | 74 |

## डी. ए. वी. स्कूल सैक्टर 8-सी

1 श्री प्रि. शीतल शर्मा
2 ,, रीतू महाजन
3 ,, कुलदीप
4 ,, इन्द्रजीत कलसी
5 ,, सुनीता नागपाल
6 ,, शबनम ग्रोवर
7 ,, भूपिन्द्र जीत संधू
8 ,, रीता गुप्ता
9 ,, जयकिरण हरिकी
10 ,, तलवाड़
11 ,, रीता चोपड़ा
12 ,, उषा नागपाल
13 ,, कुमारी नीना
14 ,, कुमारी सुजाता
15 ,, मदु प्रताप
16 ,, कंवलजीत
17 ,, तिलक
18 ,, के. वी. हांडा
19 ,, तविन्द्र संधू
20 ,, मृदुभा श्रीवास्तव
21 ,, रोमा आहुजा
22 ,, इन्द्रदीप
23 ,, रविन्दर संधू
24 ,, कमल वासमी
25 ,, परमजीत महाजन
26 ,, सुरजीत
27 ,, एस. के. सिंधू

## स्त्री समाज सैक्टर 7-सी

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्रीमती वेद महाजन | 1585 |
| 2 | ,, शान्ती देवी महाजन | 1584 |
| 3 | ,, लाजवन्ती तलवाड़ | 1535 |
| 4 | ,, शान्ति देवी दत्ता | 15 |
| 5 | ,, मधु नैयर | 1577 |
| 6 | ,, कौशल्या बंगा | दुकान नं० 2 |
| 7 | ,, सरोज | 941 |
| 8 | ,, पुष्पा देवी | 336 |
| 9 | ,, रेनु वर्मा | 1628 |
| 10 | ,, प्रो निर्मल | 9 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 11 | ,, शकुन्तला चौपड़ा | 1587 | |
| | सैक्टर 8 | | |
| 1 | श्रीमती सुदेश त्रैहन | 510 | |
| 2 | ,, सुशीला पुन्छी | 170 | |
| 3 | ,, विद्यावती सहगल | 550 | |
| 4 | ,, शशी कान्ता | 835 | |
| 5 | ,, संयोक्ता | 601 | |
| 6 | ,, प्रमोद दत्ता | 745 | |
| 7 | ,, सुशीला अग्रवाल | 767 | |
| 8 | ,, विमला रानी | 762 | |
| 9 | ,, विमला शारदा | | |
| 10 | ,, कोहली | 1200 | |
| 11 | ,, सुनीता वर्मा | 101 | |
| 12 | ,, इन्बु आनन्द | 1180 | 26001 |
| 13 | ,, जनक मल्होत्रा | 1250 | |
| 14 | ,, सुशीला | 1240 | |
| 15 | ,, ऊषा घई | 1055 | |
| 16 | ,, रमा घई | 1054 | |
| 17 | ,, ऊषा पाल | 1010 | |
| 18 | ,, कौशल्मा मेहता | 559 | |
| 19 | ,, जनक वाघई | 12 | |
| 20 | ,, वेद प्रभाकपूर | 1245 | |
| 21 | ,, पुष्पा खुराना | | 19-ए |
| 22 | ,, लीलावती तलवाड़ | 121 | 19 ,, |
| 23 | ,, सुमन बांसल | 1231 | 19-बी |
| 24 | ,, सोनिया | | |
| 25 | ,, सुशीला सूद | 19 | 19 ए |
| 26 | ,, श्यामा वती सूद | ,, | ,, |
| 27 | ,, सुशील कुमार डूडेजा | 103 | 27 A |
| 28 | ,, सत्यवती खुराना | 1048 | 8-सी |
| 29 | ,, ढोगरा | | |
| 30 | ,, साई किरन | 1019 | 8 सी |
| 31 | ,, बिमला गबा | 1039 | 7-सी |
| 32 | ,, सौभाग्वती वर्मा | 638 | 7-बी |
| 33 | ,, रोमा दिवान | 109 | 7-ए |
| 34 | ,, लीला वती | | |
| 35 | ,, कुसुम कक्कड़ | | |
| 36 | ,, कृष्णा भसीन | 1063 | 8-सी |
| 37 | ,, सुमित्रा अरोड़ा | 519 | 7-बी |
| 38 | ,, प्रमिला कपूर | 1607 | 7-सी |
| 39 | ,, लीला वती कुमराह | | |
| 40 | श्रीमती राजरानी | 284 | 7-ए |
| 41 | श्री महेन्द्रनाथ शर्मा | 1230 | 8-सी |
| 42 | श्रीमति सोविनी वधवा | 1077 | 8-सी |
| 43 | श्री स्वतन्त्र कपूर | 1235 | 8-सी |
| 44 | श्री चान्द गूलयानी | 141 | 38-ए |

पुत्री पाठशाला सैकंड्री स्कूल, खन्न, लुधियानाा

1 श्रीमती सरोज कुन्दा
2 श्री वासदेव छेरिया
3 श्री प्रेम लाल गुप्ता
4 श्री रणवीर सिंह सूद
5 सुरेन्द्र पाल सिंह
6 निर्मल प्रकाश
7 कुलभूषण राय

## डी. ए. वी. सिनी. सेकण्ड्री स्कूल चण्डीगढ़, 8-C

1 श्री रवीन्द्र तलवार, प्राचार्य
2 ,, रामगोपाल शर्मा, प्रवक्ता
3 ,, के. सी. मलिक ,,
4 ,, आ. के. सेठी ,,
5- श्री आर. के, थमन प्रवक्ता
6 ,, सुभाष मलिक ,,
7 ,, जी. एस. गोयल ,,
8 ,, गुरदयाल सिंह ,,
9 के. एल. अरोड़ा ,,

## प्राध्यापक/प्राध्यापिकाएं

1 श्री रघवीर सिंह
2 ,, एस. एल. बांसल
3 के. के. तुली
4 ,, डी. वी. प्रसाद
5 ,. पी. के. शर्मा
6 ,, एन. डी. वसीस
7 ,. यश पाल वर्मा
8 ,. के. के. मेहता
9 ,, एस. एम. सोरी
10 ,, आर. के. जिन्दल
11 ,, हरीश सिंगला
12 ,, आर. के. कपीला
13 ,, चन्द्रभान सिंह
14 ,, एम. एस. शर्मा
15 ,, जशवन्त सिंह
16 ,, पी. एन. रतन
17 श्री के. एल. सेठ
18 ,, विनोद कुमार
19 ,, मनोहर दत्त
20 ,, एस. एन. वर्मा
21 ,, एम. एल. गर्ग
22 गोपाल कृष्ण
23 ,, डी. डी. कौल
24 ,, होशियार सिंह
25 ,, आदर्श कुमार
26 ,, एम. एल. माल्ही
27 ,, जे. एल. सचदेवा
28 ,, श्रीमती बिजया कुमारी
29 ,, श्री गुरदीप सिंह
30 ,, अजय कुमार डोगरा
31 कुमारी जसविन्दर कौर
32 श्रीमती रिपु दमन कौर

## डी. पी. ई. एस

1 श्री पी. एस. वेदी
2. श्री आ. के. ठाकुर

## शिक्षक/शिक्षकाएं

1 श्री टी. आर. वर्मा
2 ,, लाभ सिंह
3 ,, वेद प्रकाश
4 ,, जय नारायण
5 सुरेशा नन्द
6 श्री राम सरुप सिंह
7 ,, रामाश्रय भारद्वाज
8 श्री वी. के. सोखी
9 ,, प्रकाश चन्द
10 ,, अमरजीत सिंह
11 शिव कुमार शर्मा
12 सुनील दत्त
13 कुमारी बबीता खन्ना

## पी. टी. आई.

1 श्री काश्मीर सिंह
2 श्री रणधीर सिंह

## SUPW (Works Experience)

1 श्री एस, के. गर्ग
2 ,, सुखदेव सिंह
2 श्री जगदीश सिंह
4 ,, पुनदीर

## कार्यालय

1 श्री तिरलोक चन्द खुल्लर
2 श्री राकेशकुमार शर्मा
3 एच. के. कौशिक
4 ,, अश्विनी कुमार
5 राम नाथ
6 श्री उत्तम सिंह
7 विनोद महाजन
8 राममूर्ति
9 ,, प्रवीण कुमार
10 ,, के. के. कपिला